राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

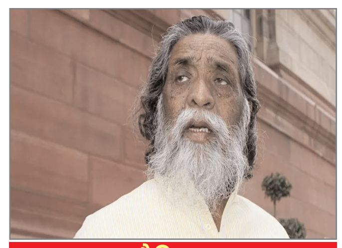

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापुर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, सोमवार, 17 नवंबर 2025
वर्ष 14, अंक 214, पृष्ट 04, मूल्य: 01 रुपया
www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

पुलिस मुठभेड़ में एक बदमाश को लगीं गोली, तीन बदमाश चढ़े पुलिस के हत्थे..03

नगराम में घायल मिला राजकीय पक्षी सारस, इलाज के दौरान तोड़ा दम..04

वीरांगना ऊदा देवी का राष्ट्र प्रेम अनंतकाल तक भारत के हर नागरिक को प्रेरणा देता रहेगा: राजनाथ सिंह

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार को कहा कि वीरांगना ऊदा देवी का राष्ट्र प्रेम अनंतकाल तक भारत के हर नागरिक को प्रेरणा देता रहेगा। राजनाथ सिंह ने रविवार को यहां सेक्टर-19 वृंदावन कॉलोनी, पासी चौराहे पर वीरांगना ऊदा देवी पासी की प्रतिमा का अनावरण और स्वाभिमान समारोह का उद्घाटन करने के बाद बतौर मुख्य अतिथि अपने संबोधन में कहा कि वीरांगना ऊदा देवी का राष्ट्र प्रेम अनंतकाल तक भारत के हर नागरिक को प्रेरणा देता रहेगा। ऊदा देवी के शौर्य और बलिदान को स्मरण करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा, भारत की नारी शक्ति स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा के लिए कभी भी किसी से पीछे नहीं रहीं। आज सैनिक स्कूल के दरवाजे भी लड़कियों के लिए खोल दिए गए हैं।'' उन्होंने कहा, भारतीय महिलाएं सियाचिन से लेकर समंदर की गहराइयों तक देश की सुरक्षा चक्र को और अधिक मजबूत कर रही हैं।'' ऑपरेशन सिंदूर की याद दिलाते हुए सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान महिला पायलटों और महिला सैनिकों ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने कहा कि ऊदा देवी को एक नेतृत्व के रूप में याद किया जाना चाहिए जिन्होंने दलित महिलाओं को अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए एकजुट किया।

उन्होंने कहा, ''मैं निसंकोच कह सकता हूं कि भारत की आन-बान-शान के लिए हर बेटी ऊदा देवी बन सकती है।'' राजनाथ सिंह ने ऊदा देवी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि अपने पति के शहीद होने के बाद उनकी (ऊदा देवी) हिम्मत टूटी नहीं बल्कि उनके अंदर और ताकत पैदा हुई और प्रतिज्ञा ली कि अपने पति की शहादत का बदला लेकर रहेंगी और उन्होंने वह बदला लिया। सिंह ने कहा कि वीरांगना ऊदा देवी ने अप्रतिम साहस से न केवल अंग्रेजों की सेना को धूल चटाई, बल्कि राष्ट्र प्रेम का ऐसा मानक तैयार किया जो भारत के हर नागरिक को अनंतकाल तक प्रेरणा देता रहेगा। रक्षा मंत्री सिंह ने कहा, ''ऊदा देवी ने अकेले ही 36 ब्रिटिश सैनिकों को मार दिया। इतना ही नहीं, जब कोई भारत की ओर आंख उठाकर देखेगा तो भारत की बेटी उसका डटकर मुकाबला कर सकती है, यह प्रेरणा भी वीरांगना ऊदा देवी पासी ने दी।'' सिंह ने उनके पराक्रम की कहानी सुनाते हुए कहा कि जब अंग्रेज की एक बटालियन से लड़ते हुए ऊदा देवी शहीद हुई तो उनके मृत शरीर को देखकर ब्रिटिश अधिकारियों ने झुक कर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया था।

उन्होंने कहा कि उस समय के अंग्रेज अधिकारी ने अपना हैट उतारकर वीरांगना

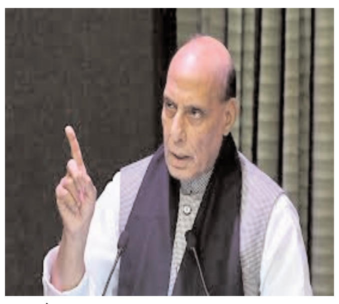

को सैल्यूट किया था, यह इतिहास के पन्नों में अंकित है। उन्होंने कहा कि वीरांगना ऊदा देवी ने न केवल पासी समाज बल्कि पूरे देश को गौरवान्वित किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक भारतीय को उन पर गौरव की अनुभूति होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दलित समाज से आयी वीरांगना ऊदा देवी ने लखनऊ में अपना बलिदान दिया। उन्होंने कहा, ''दलित समाज से आने वाले एक और महान व्यक्ति बाबा साहब डॉक्टर भीमराव आंबेडकर का हमारे लखनऊ से एक खास रिश्ता रहा है।

बाबा साहब के लिए गुरु समान भदंत प्रज्ञानंद लखनऊ में रहते थे, लखनऊ को बाबा साहब की स्नेह भूमि के रूप में जानते हैं।'' रक्षा मंत्री ने कहा, 'आज ऊदा देवी को उनके मातृभूमि के समर्पण के लिए याद करते हैं, लेकिन उनकी गौरव गाथा को दो और वजहों से याद किया जाना चाहिए। पहली ऊदा देवी की कहानी हमें आत?मसम्?मान सिखाती और हमारे अंदर स्वाभिमान की भावना पैदा करती है।'' सिंह ने कहा, ''1857 की क्रांति के इतिहास में ऊदा देवी पासी ने न केवल अंग्रेजों को चुनौती दी बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था को भी चुनौती दी जिसने उनके समाज को सदियों तक हाशिए पर रखा।

उन्होंने यह सिद्ध किया कि देशभक्ति या वीरता किसी जाति वर्ग या सीमा में नहीं बांटी जा सकती है। लखनऊ की लड़ाई में उन्होंने दिखाया कि स्वतंत्रता की ज्वाला हर हृदय में प्रज्ज्वलित हो सकती है। वह समाज की सबसे उपेक्षित ही क्यों न हो, उसके हृदय में भी देश भक्ति की ज्वाला प्रज्ज्वलित रहती है।'' रक्षा मंत्री ने दूसरा संदर्भ सुनाते हुए कहा कि देशभक्ति की लड़ाई में महिलाओं की भूमिका को ऊदा देवी ने रोशन किया। सिंह ने कहा कि वह हमें याद दिलाती हैं कि यदि महिलाएं बंदूक का उपयोग कर सकती हैं तो युद्ध में लड़ सकती हैं, ब्रिटिश सैनिकों को मार सकती हैं तो वह किसी भी मामले में पुरुषों से कम नहीं हैं। राजनाथ सिंह ने भव्य आयोजन के लिए विधान परिषद सदस्य रामचंद्र प्रधान की सराहना की और कहा कि हर वर्ष इस तरह का एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, केन्द्रीय राज्य मंत्री कमलेश पासवान और कार्यक्रम के आयोजक विधान परिषद सदस्य रामचंद्र प्रधान ने भी समारोह को संबोधित किया।

नेपाल के बाद अमेरिका के पड़ोसी देश में सड़कों पर उतरे Gen - Z, कई शहरों में फैला प्रदर्शन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नेपाल के बाद अब अमेरिका के पड़ोसी देश मेक्सिको में भी जेन-जेड आंदोलन ने जोर पकड़ लिया है। बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार और हिंसा के खिलाफ शनिवार को हजारों लोग सड़कों पर उतरे। यह प्रदर्शन मुख्य रूप से राष्ट्रपति क्लाउडिया शेनबाउम की सुरक्षा नीतियों और ड्रग कार्टेलों के खिलाफ नरमी के विरोध में किया गया। खासकर मिशोआकान राज्य में ड्रग तस्करों के खिलाफ अभियान चला रहे मेयर कार्लोस मंज़ो की हत्या के बाद आंदोलन ने तेजी पकड़ी।

विपक्षी दलों का समर्थन

जेन-जेड आंदोलन को विपक्षी दलों के विभिन्न आयु वर्ग के नेताओं और समर्थकों का भी खुलकर समर्थन मिला है। आंदोलन अब व्यापक रूप धारण कर चुका है। ज्यादातर प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहे, लेकिन अंत में कुछ युवाओं और पुलिस के बीच झड़पें भी हुईं। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर पत्थर, पटाखे, लाठियां और जंजीरें फेंकी और उनकी ढालें और उपकरण छीन लिए। जवाब में पुलिस ने आंसू गैस छोड़ी और लाठीचार्ज किया।

झड़प में 120 घायल, 20 गिरफ्तार

राजधानी के सुरक्षा सचिव पाब्लो वाजक्वेज ने बताया कि झड़पों में कुल 120 लोग घायल हुए, जिनमें से 100 पुलिस अधिकारी शामिल हैं। इस मामले में 20 प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया गया। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में पुलिस द्वारा प्रदर्शनकारियों को घसीटते और बल प्रयोग करते दिखाया गया, जिससे मनमानी गिरफ्तारियों और दुरुपयोग के आरोप लगे।

जेन-जेड आंदोलन की वजहें

जेन-जेड यानी 1990 के दशक के अंत और 2010 के शुरुआती वर्षों में जन्मे युवा इस साल कई देशों में असमानता, लोकतांत्रिक पतन और भ्रष्टाचार के खिलाफ सड़कों पर उतरे हैं। नेपाल में सितंबर में हुए जेन-जेड प्रदर्शन के बाद प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा था। मेक्सिको में युवा भ्रष्टाचार, हिंसक अपराध और अपराधियों को दंड न मिलने से परेशान हैं। वे सरकार को 'नार्को-स्टेट' (ड्रग माफिया प्रभावित राज्य) कहकर निशाना बना रहे हैं।

सोशल मीडिया ने आंदोलन को बढ़ाया

इस प्रदर्शन में केवल युवा ही नहीं, बल्कि विभिन्न आयु वर्ग के लोग शामिल हुए। पूर्व राष्ट्रपति विसेंट फॉक्स और मेक्सिकन अरबपति रिकार्डो सेलिनास प्लीगो ने सोशल मीडिया पर समर्थन संदेश जारी किए। प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रीय महल (पलासियो नासियोनल) के आसपास की बाड़ तोड़ी और राष्ट्रपति शेनबाउम के इस्तीफे की मांग की। कई ने 'वन पीस' कार्टून से प्रेरित समुद्री डाकू का खोपड़ी वाला झंडा लहराया, जो जेन-जेड आंदोलन का वैश्विक प्रतीक बन चुका है। एक 29 वर्षीय प्रदर्शनकारी एंड्रेस मासा ने कहा, 'हमें अधिक सुरक्षा की जरूरत है। देश मर रहा है।' यह आंदोलन मेक्सिको सिटी से अन्य शहरों में भी फैल गया है, जहां युवा सरकार पर कार्टल हिंसा रोकने में नाकामी का आरोप लगा रहे हैं।

महिला की सिर कटी लाश मिलने की गुत्थी सुलझी, शादीशुदा प्रेमी ही निकला कातिल, दी थी खौफनाक मौत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महिला की कथित हत्या के मामले में पुलिस ने एक बस चालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने शनिवार को बताया कि महिला का सिर व दोनों हाथ कटा शव छह नवंबर को एक नाले में मिला था। पुलिस उपायुक्त (नोएडा) यमुना प्रसाद ने बताया कि सेक्टर-39 थानांतर्गत एक नाले में उक्त शव मिला था और उसके पैर में मौजूद बिछुए शिनाख्त योग्य साधन थे। उन्होंने बताया कि महिला की पहचान और संदिग्ध की तलाश के लिए नौ पुलिस टीमें गठित की गईं। प्रसाद ने कहा, 5000 से अधिक सीसीटीवी कैमरों की (फुटेज की) पड़ताल गई और 1100 से अधिक वाहनों की जांच की गई। इनमें से 44 वाहनों को अलग कर उनके मालिक और चालकों से पूछताछ की गई। पुलिस के अनुसार जांच के दौरान पुलिस को पांच नवंबर को घटनास्थल के पास एक सफेद और नीली रंग की बस(पंजीकरण क्रमांक यूपी16 केटी 0037) के संदिग्ध रूप से घूमने का पता चला। पुलिस ने कहा कि उक्त बस का

चालक नोएडा के बरोला का निवासी मोनू सिंह उर्फ मोनू सोलंकी निकला। अधिकारी ने बताया कि इसके बाद की गई जांच में खुलासा हुआ कि महिला प्रीति यादव उर्फ प्रीति देवी थी जो पांच से छह दिन से गायब थी व उसका सिंह के साथ उसका लंबे समय से विवाद चल रहा था। पुलिस ने शुक्रवार को सिंह को गिरफ्तार कर लिया और उसके द्वारा किए गए खुलासे के आधार पर बस, खून से सनी चटाई, मृतका के कपड़े और अन्य सामान बरामद किया। पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) ने कहा कि पूछताछ में सिंह ने कथित तौर पर पुलिस को बताया कि उसके प्रीति के साथ अवैध संबंध थे और वह बरोला में अपनी मां के साथ एक जींस फैक्ट्री में काम करती थी।

उसने दावा किया कि प्रीति उससे जबरन पैसा ऐंठने लगी थी व उसे और उसकी बेटियों को अवैध गतिविधियों' में फंसाने की धमकी देती थी। प्रसाद ने बताया कि आरोपी ने यह स्वीकार किया है कि पांच नवंबर को उसने प्रीति को अपने साथ लिया और उसकी जानकारी के बिना उसके घर से गंडासा (धारदार हथियार) भी लिया। उन्होंने बताया, दोनों ने बस के अंदर खाना खाया और इसके बाद उनके बीच कहासुनी हो गई। सिंह ने दावा किया कि उसने हथियार से उस पर वार किया और सिर धड़ से अलग कर दिया व पहचान छिपाने के लिए उसके हाथ भी काट दिए। आरोपी ने कथित तौर पर धड़ को नोएडा के एक नाले में फेंक दिया और बाकी अवशेषों तथा हथियार को गाजियाबाद के सिद्धार्थ विहार के पास एक सूखे नाले में फेंक दिया। प्रसाद ने बताया कि बस और अन्य जब्त की गई वस्तुओं में मानव रक्त के मौजूद होने की पुष्टि हुई है। पुलिस ने बताया कि भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 103(1) और 238 के तहत एक प्राथमिकी दर्ज कर मामले में कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

संक्षिप्त ख़बरें

पूरी इमारत में लगी आग, जान बचाने के लिए बाथरूम में छिपा... गोरखपुर में दम घुटने से शख्स की मौत

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में रामगढ़ताल इलाके में रविवार सुबह चार मंजिला इमारत में आग लगने की घटना से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया. आग बिल्डिंग की पहली मंजिल में लगी थी, जो देखते ही देखते पूरी बिल्डिंग में फैल गई. आग इतनी भयावह थी कि पूरी बिल्डिंग आग का गोला बन गई. बिल्डिंग से आग की ऊंची-ऊंटी लपटे निकल रही थीं, जो दूर से ही दिखाई दे रही थीं. जानकारी के बाद मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने आग पर काबू पाने की कोशिश की. वहीं आग का धुआं पूरे इलाके में फैल गया. आग के धुएं से बिल्डिंग के बॉथरूम में छिपे हाउस कीपिंग स्टाफ की दम घुटने से मौत हो गई. आग से बचने के लिए बिल्डिंग के बॉथरूम में युवक छिपा हुआ था. चार मंजिला बिल्डिंग में रेस्टोरेंट और कई दुकानें चलती थी. शॉर्ट सर्किट से आग लगने की आशंका जताई जा रही है. फायर बिग्रेड की टीम ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

चार मंजिला बिल्डिंग में लगी आग

गोरखपुर के रामगढ़ताल थाना क्षेत्र में एक चार मंजिला बिल्डिंग में वाटर वेज रेस्टोरेंट बैंक्वेट हॉल पिछले चार वर्षो से चल रहा था. बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर पर मिठाई की दुकान, फर्स्ट फ्लोर पर रेस्टोरेंट और उसके ऊपर बैंक्वेट हॉल चलता था. रविवार की सुबह बिल्डिंग में आग लग गई. आग बिल्डिंग के फर्स्ट फ्लोर में लगी थी लेकिन देखते ही देखते पूरी बिल्डिंग को अपने आगोश में ले लिया. बिल्डिंग में दो लोगों फंसे थे. वहीं एक युवक अपनी जान बचा कर भाग गया लेकिन दूसरा बिल्डिंग में ही फंसा रह गया, वो अपनी जान बचाने के लिए बिल्डिंग के बॉथरूम में छिप गया लेकिन धुएं से दम घुटने की वजह से उसकी मौत हो गई।

कड़ी मशक्कत के बाद पाया काबू

सूचना पर मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की चार गाड़ियों ने दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया. टीम ने रेस्क्यू कर बिल्डिंग में फंसे युवक को बाहर निकाला और उसे बीआरडी मेडिकल कॉलेज भेजा गया., जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया. आग लगने वाले इमारत की अनुमानित कीमत 10 से 12 करोड़ रुपए बताई जा रही है. वहीं इस मामले में CFO संतोष कुमार राय ने बताया कि रविवार की सुबह फायर टीम को रामगढ़ ताल थाना क्षेत्र में आग लगने की सूचना मिली थी. इसके बाद फायर की टीम मौके पर पहुंच कर कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया. आग लगने का कारण प्रथम दृष्ट्या शॉर्ट सर्किट लग रहा है।

शत्रुघ्न सिन्हा क्या घर वापसी की तैयारी कर रहे, NDA की जीत से हुए गदगद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की एकतरफा जीत के बाद भाजपा से बगावत करने वाले पुराने दिग्गज भी अब बैकफुट आते दिख रहे हैं. राज्य में जेडीयू-भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को 202 सीटें मिली हैं. यह एक बहुत बड़ी जीत है. 101-101 सीटों पर चुनाव लड़ने वाली भाजपा और जेडीयू को क्रमशः 89 और 85 सीटें मिली हैं. इस चुनाव परिणाम ने चंद रोज पहले तक बिहार की राजनीति में नीतीश कुमार का दौर खत्म होने की भविष्यवाणी करने वालों को करारा जवाब दिया है. नीतीश कुमार ने एक बार साबित कर दिया है कि बिहार के नब्ज को उनसे बेहतर कोई नहीं समझ सकता. ऐसे में अब पुराने बागी भी नीतीश और भाजपा की प्रशंसा करते नहीं थक रहे हैं।

इस सूची में सबसे प्रमुख नाम है टीएमसी सांसद शत्रुघ्न सिन्हा का. बॉलीवुड के 'शॉटगन' शत्रुघ्न सिन्हा ने इस शानदार जीत पर जेडीयू और भाजपा को दिल खोलकर बधाई दी है. इस एक्स पर एक पोस्ट में शत्रुघ्न सिन्हा ने लिखा है-

बधाई हो! बिहार के लोगों को उनकी पसंद की सरकार, जिसके लिए उन्होंने वोट

दिया और सबसे सम्मानित, सज्जन राजनेता @NiteshKumar के नेतृत्व के लिए, जो बिहार के सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले, भरोसेमंद, आजमाए हुए, परखे हुए और सफल मुख्यमंत्री रहे हैं. उन्होंने लोगों की उम्मीदों पर खरा उतरने का काम किया है. उनके आसपास के सभी लोगों और पार्टियों को भी बधाई. ईश्वर सबका भला करे और सभी को बधाई. जय बिहार! जय हिंद!

पीएम मोदी को दी थी बधाई

इससे पहले उन्होंने पीएम नरेंद्र मोदी के जन्मदिन 17 सितंबर को भी उन्होंने उनको बधाई दी थी और उनके साथ अपनी एक पुरानी तस्वीर शेयर की थी. उस पोस्ट के साथ उन्होंने लिखा था- एक बार के दोस्त हमेशा दोस्त होते हैं. शत्रुघ्न सिन्हा अटल बिहारी वाजपेयी-लालकृष्ण आडवाणी के दौर के बड़े भाजपा नेता थे. वह 1980 के दशक में भाजपा से जुड़े थे. वह 1990 में पहली बार भाजपा के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा और दिल्ली की न्यू दिल्ली सीट से सांसद चुने गए. यह जीत उनके राजनीतिक करियर की शुरुआत थी।

इसके बाद वह 1991 में भी इस सीट से जीते. उनकी लोकप्रियता और पार्टी के प्रति निष्ठा ने उन्हें अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां दिलाई. 2002-03 में वे केंद्रीय जहाजरानी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बने और 2003-04 में केंद्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री के रूप में कैबिनेट में शामिल हुए. 2009 और 2014 में वह ने पटना साहिब लोकसभा सीट से भाजपा के टिकट पर जीत हासिल की. इसके बाद हालांकि पार्टी नेतृत्व के साथ उनके रिश्ते ठीक नहीं रहे. 2019 में मतभेद चरम पर पहुंचे और सिन्हा को पटना साहिब से टिकट नहीं मिला. इसके बाद उन्होंने भाजपा छोड़कर तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) में शामिल होने का फैसला किया. 2024 के आम चुनाव में वह टीएमसी के टिकट पर आसनसोल से सांसद हैं. लेकिन, बीते कुछ समय से वह जिस तरह से भाजपा और एनडीए नेतृत्व की तारीफ कर रहे हैं उससे संभावना जताई जा रही है कि वह आने वाले वक्त में घर वापसी करने की सोच रहे हैं।

चुनाव फ्री एंड फेयर होता तो....बिहार चुनाव के नतीजों पर क्या बोलीं मायावती

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 203 सीटों पर दर्ज की. इस जीत से एनडीए खेमे में जबरदस्त उत्साह है. वहीं इंडिया गठबंधन को इस चुनाव में करारा झटका लगा है. महागठबंधन महज 35 सीटों पर ही सिमट गया. इधर मायावती की बीएसपी ने एक सीट पर जीत दर्ज की. इस बीच मायावती का बयान सामने आया है. उन्होंने बिहार चुनाव की निष्पक्षता पर सवाल उठाए हैं.

बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) की अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती का कहना है कि अगर चुनाव पूरी तरह से स्वतंत्र और निष्पक्ष होते तो उनकी पार्टी और भी सीटों पर जीत दर्ज करती. उन्होंने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया है, जिसमें उन्होंने कहा बिहार विधानसभा चुनाव की निष्पक्षता पर सवाल खड़े किए हैं।

मायावती ने कार्यकर्ताओं को का जताया आभार

अपनी पोस्ट में बीएसपी प्रमुख मायावती ने लिखा 'मैं बिहार विधानसभा के हाल में हुए चुनाव में कैमूर जिले की रामगढ़ विधानसभा सीट पर बसपा के उम्मीदवार सतीश कुमार सिंह यादव को जीत दिलाने के लिये पार्टी के सभी सदस्यों को बधाई देती हूं और उनका तहेदिल से आभार प्रकट करती हूं'।

'हराने की पूरी कोशिश की लेकिन...'

उन्होंने आगे कहा 'वहां के प्रशासन और सभी विरोधी दलों ने मतों की गिनती बार-बार कराने के बहाने बीएसपी उम्मीदवार को हराने की पूरी कोशिश की लेकिन पार्टी के बहादुर कार्यकर्ताओं के पूरे समय डटे रहने के कारण विरोधियों का यह षड्यंत्र सफल नहीं हो सका'. उन्होंने कहा कि बिहार के इस क्षेत्र की अन्य सीट पर विरोधियों को कांटे की टक्कर देने के बावजूद बीएसपी उम्मीदवार चुनाव नहीं जीत सके।

'चुनाव निष्पक्ष होता तो और सीटें जीतते'

पूर्व सीएम ने कहा कि अगर चुनाव पूरी तरह से स्वतंत्र एवं निष्पक्ष होता तो लोगों से मिली प्रतिक्रिया के अनुसार बीएसपी और भी कई सीट जरूर जीतती. लेकिन ऐसा नहीं हो सका. उन्होंने अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं से कहा कि वो घबराए नहीं साथ ही आगे और भी ज्यादा तैयारी के साथ काम करें।

बीएसपी ने एक सीट पर दर्ज की जीत

बिहार में विधानसभा चुनाव में बीएसपी को एक सीट पर जीत मिली है. कैमूर जिले की रामगढ़ विधानसभा सीट पर बसपा प्रत्याशी सतीश कुमार सिंह यादव ने मामूली अंतर से ही सही लेकिन जीत अपने नाम की. उन्होंने बीजेपी के अशोक कुमार सिंह पर लगातार बढ़त बनाए रखी. यहां से बीएसपी के प्रत्याशी सतीश यादव ने महज 30 वोटों से जीत हासिल की और बीजेपी उम्मीदवार को शिकस्त दी।

एनडीए ने 202 सीटों पर जमाया कब्जा

बिहार में विधानसभा चुनावों की मतगणना 14 नवम्बर को हुई थी, जिसमें एनडीए को प्रचंड बहुमत मिला है. 243 सीटों में से एनडीए ने 202 सीटों पर जीत दर्ज की . जबकि महागठबंधन को खासा निराशा हाथ लगी है. बीजेपी 89 सीट जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी. वहीं जेडीयू ने 85 सीटें जीतीं, इसके अलावा केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के नेतृत्व वाली लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) को 19 सीट मिलीं।

बिहार चुनाव में हार, UP में सीटों पर रार! INDIA गठबंधन पर क्यों उठ रहे सवाल?

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिहार चुनाव में हार के बाद अब उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन के भविष्य को लेकर सवाल उठने लगे हैं. समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच सीटों की तकरार से 2027 विधानसभा चुनाव तक इंडिया गठबंधन के बने रहने को लेकर अनिश्चितता पैदा हो गई है. उत्तर प्रदेश के राजनीतिक हलकों में इस बात को लेकर चर्चाएं तेज हो गई है कि जिस मॉडल ने 2024 के लोकसभा चुनावों में एनडीए के खिलाफ विपक्ष को पर्याप्त बढ़त दिलाने में मदद की थी. वो क्या बिहार से आई उथल-पुथल से बच पाएगा. इन नतीजों ने न केवल सत्तारूढ़ भाजपा का मनोबल बढ़ाया है, बल्कि विपक्षी खेमे में नए संदेह, तनाव और रणनीतिक पुनर्गणना को भी जन्म दिया है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तीखे राजनीतिक हमले कांग्रेस को 'मुस्लिम लीग' और 'माओवादी' पार्टी कहना और पार्टी में आसन्न विभाजन की भविष्यवाणी करना ने इस बहस को और तेज कर दिया है. उनकी टिप्पणियों को न केवल कांग्रेस की आंतरिक स्थिति का आकलन माना जा रहा है, बल्कि 2027 के विधानसभा चुनावों से पहले राजनीतिक विमर्श को आकार देने के एक रणनीतिक प्रयास के रूप में भी देखा जा रहा है।

मगध के बाद अब अवध... यूपी चुनाव की तैयारी

दूसरी ओर, उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने विपक्ष पर तीखा प्रहार करते हुए कहा, 'मगध के बाद अब अवध,' जिससे यह संकेत मिलता है कि भाजपा बिहार के नतीजों को उत्तर प्रदेश में

भी व्यापक जीत का अग्रदूत मान रही है. कांग्रेस, जिसने 2024 के लोकसभा चुनावों में सपा के साथ गठबंधन करके उत्तर प्रदेश में कुछ राजनीतिक जान फूंक दी थी, अब सतर्क दिखाई दे रही है. वह 2027 में महागठबंधन के भविष्य के बारे में स्पष्ट जवाब देने से बच रही है. प्रधानमंत्री मोदी की टिप्पणी पर टिप्पणी करते हुए उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने पीटीआई से कहा, 'उन्हें पहले खुद को देखना चाहिए. वह हमारी बातें क्यों दोहरा रहे हैं? वह कांग्रेस के बारे में क्या जानते हैं? हम अपनी पार्टी को बेहतर जानते हैं।

सपा-कांग्रेस की साझेदारी पर सवाल

हालांकि, राजनीतिक दिखावे के बावजूद, एक अहम सवाल है कि क्या सपा-कांग्रेस की साझेदारी, जिसने 2024 में उत्तर प्रदेश की 80 में से 43 लोकसभा सीटें जीती थीं. 2027 तक बरकरार रहेगी, या विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही मतभेद पैदा हो जाएंगे? राजनीतिक विश्लेषकों का तर्क है कि राज्य में विपक्ष का भविष्य इन दोनों दलों की एकता और समन्वय पर निर्भर करता है. सपा और कांग्रेस दोनों ही सार्वजनिक रूप से 'सब ठीक है' का दावा करते हैं, लेकिन राजनीतिक इतिहास कुछ और ही कहता है. 2017 के विधानसभा चुनावों की हार के बाद, राहुल गांधी और अखिलेश यादव के बीच गठबंधन टूट गया, जिससे बहुचर्चित 'यूपी के लड़के' की साझेदारी खत्म हो गई. उस मनमुटाव की यादें आज भी ताजा हैं. फिर भी, 2024 के लोकसभा चुनावों ने उनके सहयोग को पुनर्जीवित किया और विपक्ष का मनोबल बढ़ाया. कई राजनीतिक टिप्पणीकारों ने 2027 में एक और कड़ी टक्कर की भविष्यवाणी शुरू कर दी थी. लेकिन उनका दावा है कि बिहार चुनाव के नतीजों ने अब उन भविष्यवाणियों पर पानी फेर दिया है।

बिहार चुनाव में जीत बनेगा यूपी में हथियार

सपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और पूर्व मंत्री राजेंद्र चौधरी ने राजनीतिक झटके की आशंकाओं को खारिज कर दिया। पीटीआई से बात करते हुए, चौधरी ने कहा, 'कोई झटका नहीं है. हम कारणों को समझने के लिए परिणामों की समीक्षा करेंगे. इंडिया गठबंधन मजबूत बना रहेगा. ' उन्होंने कहा कि पार्टी बिहार के नतीजों से सीख लेगी और राज्य में सपा कार्यकर्ता एसआईआर प्रक्रिया में कथित 'अनियमितताओं' को लेकर पहले से ही सतर्क हैं, जो उत्तर प्रदेश में सभी राजनीतिक दलों की कड़ी निगरानी के साथ शुरू हो चुकी है. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 10 दिनों में 30 रैलियों को संबोधित किया और दरभंगा में एक रोड शो भी किया. उपमुख्यमंत्री मौर्य ने भी व्यापक प्रचार किया था. भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने बिहार के नतीजों को प्रधानमंत्री मोदी के विकासोन्मुखी शासन और कल्याणकारी योजनाओं का प्रमाण बताते हुए कहा कि राजग 2027 में उत्तर प्रदेश में एक 'नया कीर्तिमान' बनाएगा।

बिहार में जनादेश एनडीए के नाम, लेकिन नेतृत्व किसके हाथ?

बिहार की राजनीति एक बार फिर हलचल के केंद्र में है। विधानसभा चुनाव 2025 के नतीजों ने यह तो साफ कर दिया कि जनता ने एनडीए पर एक बार फिर भरोसा जताया है और उसे भारी बहुमत दिया है, लेकिन मुख्यमंत्री की कुर्सी को लेकर स्थिति अभी धुंधली है। चुनाव पूर्व जिस स्पष्टता के साथ एनडीए ने नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री चेहरा घोषित किया था, वही स्पष्टता अब नज़र नहीं आती। वजह साफ है—बीजेपी इस बार एनडीए की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है और बदलते समीकरणों ने सत्ता संतुलन को नए ढंग से परिभाषित कर दिया है। यह चुनाव कई मायनों में दिलचस्प रहा। एक ओर मतदाताओं ने एनडीए को ऐतिहासिक समर्थन दिया, तो दूसरी ओर विपक्ष के लिए यह परिणाम चौंकाने वाला रहा। ग्रामीण इलाकों से लेकर शहरी क्षेत्रों तक वोटरों ने स्थिर सरकार, विकास और कानून-व्यवस्था जैसे एजेंडों पर भरोसा जताते हुए एनडीए को बड़ी बढ़त दिलाई। लेकिन स्पष्ट जनादेश के बावजूद, सत्ता के शीर्ष पद यानी मुख्यमंत्री की दौड़ में अब भी धुंधली तस्वीर, राजनीतिक कुशाग्रता और रणनीतिक संतुलन की कहानी कहती दिखाई देती है। नीतीश कुमार पिछले दो दशकों से बिहार की राजनीति में सबसे भरोसेमंद और अनुभवी चेहरे के रूप में स्थापित हैं। उनका प्रशासनिक अनुभव, गठबंधन राजनीति को संभालने की कुशलता और शांत नेतृत्व शैली उन्हें लगातार न सिर्फ जेडीयू का बल्कि एनडीए का भी प्रमुख स्तंभ बनाती रही है। चुनाव अभियान के दौरान भी बीजेपी और एनडीए के अन्य घटक दलों ने सार्वजनिक रूप से उनके नेतृत्व का समर्थन किया था। यही वजह है कि एनडीए के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार अभी भी नीतीश का नाम सबसे आगे माना जा रहा है। लेकिन राजनीति के समीकरण सिर्फ वादों और चेहरों पर नहीं टिका करते; वे आंकड़ों, दावेदारी और समय-समय पर आने वाली राजनीतिक आवश्यकताओं पर भी निर्भर रहते हैं। बीजेपी, जो इस बार सबसे बड़ी पार्टी बनकर सामने आई है, के भीतर यह आवाज़ उठना स्वाभाविक है कि जब जनादेश ने उसे सबसे अधिक सीटें दी हैं, तो मुख्यमंत्री पद उसका हक़ बनता है। यह लोकतांत्रिक राजनीति की सामान्य प्रक्रिया है—जो बड़ा, वही दावेदार। इस लिहाज़ से सम्राट चौधरी, नित्यानंद राय या रेणु देवी जैसे कुछ नाम चर्चा में हैं। इन नामों के आने का मतलब केवल इतना नहीं कि बीजेपी के भीतर महत्वाकांक्षा है; इसका संकेत यह भी है कि गठबंधन में सत्ता-साझेदारी का फार्मूला इस बार नए ढंग से तय हो सकता है। हालाँकि, यह भी ध्यान रखना होगा कि बिहार की राजनीति में स्थिरता सबसे बड़ा शब्द है। पिछले कई सालों के गठबंधन-विच्छेद, पुनर्गठन और अचानक हुए राजनीतिक मोड़ों ने जनता को उतना ही थका दिया है जितना राजनीतिक दलों को। ऐसे में एनडीए के शीर्ष नेतृत्व के लिए यह बेहद महत्वपूर्ण है कि मुख्यमंत्री पद पर ऐसा फैसला लिया जाए जिससे न तो जनता को भ्रम हो, न ही गठबंधन में कोई असंतुलन पैदा हो। यही वजह है कि बीजेपी नेतृत्व ने फिलहाल इतना ही कहा है कि मुख्यमंत्री का चयन एनडीए के सभी घटक दल मिलकर करेंगे। हाल की राजनीतिक गतिविधियों पर नज़र डालें तो ऐसा प्रतीत होता है कि एनडीए अपने अंदर असहमति की कोई छवि बाहर आने नहीं देना चाहता। गठबंधन की बैठकों को लेकर, बयानबाज़ी को लेकर सब तरफ एक सावधानी देखी जा सकती है। कोई भी दल खुलकर यह नहीं कह रहा कि मुख्यमंत्री कौन होगा, लेकिन यह भी नहीं कहा जा रहा कि नीतीश का नाम अंतिम है। इस 'कंट्रोल्ड साइलेंस' में ही बिहार की राजनीति की असली कहानी छिपी है। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि बीजेपी अपने बढ़े हुए जनाधार का लाभ ज़रूर उठाना चाहेगी, मगर वह यह भी जानती है कि बिहार का राजनीतिक सामाजिक ढाँचा जटिल है। हर निर्णय जातीय समीकरण, क्षेत्रीय संतुलन और गठबंधन की संरचना को ध्यान में रखकर ही लिया जाता है। नीतीश कुमार की स्वीकार्यता और उनके नेतृत्व में मिले पिछले चुनावों के अनुभव को भी नज़रअंदाज़ करना आसान नहीं। इसलिए राजनीतिक गणित यह कहता है कि अगर भीतर कोई बड़ा बदलाव न हुआ, तो नीतीश कुमार का फिर से मुख्यमंत्री बनना

ही संभावित है। लेकिन राजनीति समाजशास्त्र और गणित का ऐसा मिश्रण है जिसमें भविष्यवाणी हमेशा मुश्किल होती है। एक छोटी-सी हलचल, एक बैठक, एक बयान या एक रणनीतिक समझौता—यह सब पद-संतुलन को पलट सकता है। इसलिए बिहार की जनता सहित पूरे देश की नज़र अब सिर्फ एक चीज़ पर टिकी है—एनडीए की औपचारिक बैठक, जहाँ से मुख्यमंत्री नाम की अंतिम और निर्णायक घोषणा होगी। फिलहाल इतना कहना उचित है कि जीत जितनी स्पष्ट थी, मुख्यमंत्री चयन उतना ही पेचीदा होता दिख रहा है। लेकिन यह भी सच है कि बिहार की राजनीति, चाहे जितनी उलझी हो, अंत में एक ऐसा रास्ता ढूँढ ही लेती है जो स्थिरता की ओर ले जाए। और मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए यह राह नीतीश कुमार की ओर अधिक मुड़ती दिख रही है—जब तक कि राजनीति कोई नया मोड़ न ले आए।

महेन्द्र तिवारी

नायक वो नहीं जो दिखता है, बल्कि वो जो करता है

जब इंसानियत नायक बनेगी, तब दुनिया बदलेगी

नायकत्व अब अभिनय नहीं, आचरण से जन्म लेता है

सिनेमाघरों की चमकती स्क्रीन पर हर हफ़्ते कोई नया नायक जन्म लेता है – कोई तानाशाहों से लड़ता है, कोई दुनिया बचाता है, कोई अन्याय को मिटा देता है। पर जब परदा गिरता है और रोशनी बुझ जाती है, तो ये नायक वहीं ठहर जाते हैं, वहीं मर जाते हैं – फिल्म की कहानी के साथ। असली ज़िंदगी की गलियों, चौकों, और गलियारों में जब भूख, हिंसा और बेबसी नाचती है, तो वहाँ कोई नहीं उतरता। जहाँ इंसानियत की ज़रूरत होती है, वहाँ बस भीड़ होती है – जो देखती सब है, पर करती कुछ नहीं। यही हमारे समय की सबसे बड़ी त्रासदी है – नायक अब पर्दे पर हैं, जबकि उनकी ज़रूरत सड़कों पर है। हमने नायकत्व को अभिनय, संवाद और ताली की आवाज़ों में बाँध दिया है। साहस अब बॉक्स ऑफिस की कमाई से मापा जाता है, और करुणा अब पॉपकॉर्न के साथ बिकती है। हमने 'साहस' को मनोरंजन बना दिया है। पर समाज फिल्मों से नहीं बदलता, वह उन लोगों से बदलता है जो ज़मीन पर उतरकर कुछ करते हैं। किसी गिरे हुए को उठाना, किसी के हक़ में बोलना, किसी की भूख मिटाने की कोशिश करना – यही असली नायकत्व है। और आज के युग में यह सबसे दुर्लभ गुण है – 'करुणा के साथ कर्म।' हर दिन कोई हादसा होता है, कोई बच्चा बिना रोटी के सो जाता है, कोई बुज़ुर्ग अकेलेपन में डूब जाता है, कोई महिला चुपचाप अपमान सहती है – और हम? हम अगले शो के टिकट बुक करते हैं। हमने संवेदना को आउटसोर्स कर दिया है, उन काल्पनिक नायकों को जो सिर्फ परदे पर जीते हैं। हमें लगता है कि कोई आएगा, जैसे फिल्मों में होता है, और सब ठीक कर देगा। पर ज़िन्दगी कोई फिल्म नहीं है, यहाँ कोई 'हैप्पी एंडिंग' नहीं होती। जब तक कोई असली इंसान आगे नहीं बढ़ता, तब तक हर अंत अधूरा ही रहता है। नायक बनना कठिन है, क्योंकि इसमें चमक नहीं, संघर्ष है; इसमें शोहरत नहीं, जिम्मेदारी है; इसमें तालियाँ नहीं, बस थकान है। असली नायक वो नहीं जो खलनायक को हराए, बल्कि वो है जो अपने भीतर के डर, संदेह और उदासीनता से जीत जाए। जो सच बोलने की हिम्मत रखे, भले अकेला ही क्यों न हो। जो भीड़ में खड़ा होकर भी सच्चाई की ओर झुके, वही समाज का सच्चा नायक है। समाज को आज पर्दे के पीछे नहीं, ज़मीन पर काम करने वाले नायकों की ज़रूरत है। वो शिक्षक जो गांव के बच्चों में सपनों की लौ जलाता है, वो सफाईकर्मी जो बदबू में भी इज़्ज़त से काम करता है, वो डॉक्टर जो छुट्टी के दिन भी मरीज देखता है, वो लड़की जो डर के बावजूद अपनी आवाज़ उठाती है – यही वो लोग हैं जिनसे समाज सांस लेता है। लेकिन अफ़सोस, इनकी कहानी पर कैमरे नहीं घूमते, इनकी मेहनत पर ताली नहीं बजती। ये वो नायक हैं जो बिना दर्शकों के, बिना इनाम के, बस अपने कर्तव्य से प्रेरित होकर आगे बढ़ते हैं। आज हमें फिल्मों में नहीं, अपने जीवन में 'एक और नायक' चाहिए – जो कह सके 'मैं करूंगा,' चाहे कोई साथ दे या नहीं। हमें ऐसे युवाओं की ज़रूरत है जो सेल्फ़ी में नहीं, सच्चाई में दिलचस्पी रखें; जो फॉलोअर्स नहीं, बल्कि मिसाल बनने का साहस रखें। समाज तब बदलता है जब कोई व्यक्ति भीड़ से अलग होकर खड़ा होता है और कहता है – 'अब बहुत हुआ।' यही वो क्षण होता है जहाँ परिवर्तन की शुरुआत होती है। इतिहास ने हमेशा उन्हीं नायकों को याद रखा है जिन्होंने पसीने से बदलाव लिखा – भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, सुभाष चंद्र बोस, सी.वी. रमन, कल्पना चावला, बाबा आमटे, सुधा मूर्ति आदि। इनकी कहानियों में कोई फ़िल्मी सीन नहीं था, कोई ताली नहीं बजी थी, लेकिन इनका असर पीढ़ियों तक रहेगा। ये नायक प्रसिद्धि से नहीं, नीयत से पैदा हुए थे। इन्होंने दिखाया कि नायकत्व पद, प्रसिद्धि या परिधान में नहीं, बल्कि दृष्टि, नीयत और कर्म में बसता है। आज वक्त है खुद से एक सख्त सवाल पूछने का – क्या हम सिर्फ दर्शक बनकर रह जाएंगे? क्या हम सिर्फ परदे पर ताली बजाने तक सीमित रहेंगे, या फिर उन गलियों में उतरेंगे जहाँ किसी की उम्मीद टूटी है? दुनिया को फिल्मों के सुपरहीरो की नहीं, इंसानों के साहस की ज़रूरत है। हमें हर दिन, हर मोड़ पर थोड़ा-थोड़ा नायक बनना होगा – किसी के हक़ में बोलकर, किसी की मदद कर के, किसी का मनोबल बढ़ाकर। जब हममें से हर कोई अपनी सीमाओं से ऊपर उठकर इंसानियत का हाथ थामेगा, तब समाज का चेहरा सच में बदलेगा। तब कोई हादसा अनदेखा नहीं रहेगा, कोई बेबसी अनसुनी नहीं रहेगी। तब हमें यह कहने में संकोच नहीं होगा – नायक अब पर्दे पर नहीं, सड़कों पर हैं। और वही दिन होगा जब इंसानियत अपनी सबसे बड़ी भूमिका निभाएगी – बिना स्क्रिप्ट, बिना स्पॉटलाइट, पर सच्चाई और साहस के साथ।

प्रो. आरके जैन

बिरसा मुंडा पूरे देश के आदिवासी समाज के प्रेरणा स्रोत

15 नवंबर को हम हर वर्ष उसी वीर आदिवासी नेता को याद करते हैं जिसने न सिर्फ अपने जनजातीय समाज के लिए बल्कि पूरे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में एक अनूठी छाप छोड़ी । बिरसा मुंडा वर्तमान में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाये जाने वाले इस दिन पर, भारत के आदिवासी समाज की महत्ता, उनके संघर्ष और उनके आने वाले कल की दिशा पर हमें सोचने-विचारने का अवसर मिलता है।आज, गुजरात में आयोजित धार्मिक-सांस्कृतिक समागम और आदिवासी कार्यक्रमों के बीच, वह इतिहास, उस विरासत और उस भविष्य के बारे में है जिसे हमें संजोना है । विशेष रूप से जनजाति समाज के संदर्भ में। यह आयोजन यू तो पूरे देश में विभिन्न कार्यक्रम के तहत मनाया जाएगा।लेकिन गुजरात मे यह आयोजन मोदी की उपस्थिति के कारण महत्वपूर्ण हो जाता है। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को झारखंड के खूँटी-उलीहातू क्षेत्र में हुआ था। उनकी जात-पसंद मुंडा जनजाति थी, और उन्होंने बहुत ही कम आयु में यह अनुभव किया कि उनके साथी जनजातियों की जमीन-वन-जल से जुड़ी आज़ादी सिमटती जा रही है। उनका आंदोलन मुख्यतः इस ओर था कि आदिवासी अपनी जमीन, जंगल और पानी के अधिकार खोते जा रहे थे ।अंग्रेज़ सरकार की नीतियों, जमिनदारों (ज़मींदारों) और मिशनरियों की गतिविधियों के चलते। उन्होंने 1894 में उलगुलान के नाम से उस विद्रोह की शुरुआत की, जो आदिवासी समाज का अपना-राज, अपनी-भूमि का नारा लेकर चला। उनकी मृत्यु बहुत ही कम उम्र में, 1900 में हुई। लेकिन उनकी विरासत आज भी हमारे बीच जीवंत है। 'धरती आबा' (पृथ्वी के पिता) के नाम से आदिवासी समाज उन्हें याद करता है। सांस्कृतिक समागम एवं गुजरात में आदिवासी कार्यक्रमों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।गुजरात में, आदिवासी समाज के लिए आज के दिन के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। जिसमें सांस्कृतिक प्रदर्शन, जन-सामाजिक संवाद, कार्यशालाएँ, लोक कलाएँ, हाथ के कारीगरों का मंच, आदिवासी युवाओं का मंच सहभागी होना शामिल है। यह सिर्फ एक यादगार कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक सम्मान-उत्सव है, जिसमें आदिवासी समाज की गौरवशाली विरासत, संस्कृति, भविष्य-दृष्टि और समान अवसरों पर प्रकाश डाला जाएगा। ये कार्यक्रम इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे आदिवासी समुदाय को केंद्र में लाते हैं । उनके द्वारा, उनके लिए युवाओं को प्रेरणा देते हैं कि वे अपनी जड़ों से जुड़ें और आधुनिकता के साथ भी उन्हें अपनाएं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से सामाजिक समावेशिता बढ़ती है । आदिवासी समाज के कल-कार और जीवन-शैली को पूरे समाज के सामने रखा जाता है। जब एक कार्यक्रम के केंद्र में आदिवासी भाषा, लोकगीत-नृत्य, हस्त-शिल्प, खान-पान होता है, तो यह संकेत है कि उनकी संस्कृति अब अलग नहीं बल्कि भारत की विविधता का अभिन्न हिस्सा है। विशेष रूप से आज के समय में, जब भारत ने जं जातीय गौरव दिवस को राष्ट्रीय रूप से माना है। हर वर्ष 15 नवंबर को यह एक अवसर है कि हम आदिवासी समाज के योगदान को सिर्फ स्मरण न करें बल्कि उसे उत्सव के रूप में मनाएं।

प्रधानमंत्री की उपस्थिति एवं कार्यक्रमों की विशेषता

आज के कार्यक्रमों में नरेंद्र मोदी की उपस्थिति से यह संदेश जाता है कि केंद्र सरकार इस दिवस और आदिवासी समाज के कार्यक्रमों को कितनी गंभीरता से ले रही है। यह उपस्थिति आदिवासी समाज के लिए आत्म-सम्मान और उनकी आवाज़ को मान्यता देने का प्रतीक है।आदिवासी लोक-नृत्य एवं गीत संस्कृति का जश्नहोगा। हस्त-शिल्प व कला-प्रदर्शनी और आदिवासी जीवन-शैली एवं कला-प्रवृत्तियों का प्रदर्शनकिया जायेगें। संवाद सत्रः आज की चुनौतियाँ, कल के अवसर, योजनाओं की जानकारी और आदिवासी समाज को विकास-योजनाओं से जोड़ने का मुख्य लक्ष्य रहेगा। खेल, प्रतिस्पर्धाएँ, प्रेरणा-वक्तव्यआदि मुख्य है।इस तरह के समागम न केवल यादगार होंगे, बल्कि प्रेरणादायक भी होंगे।एक ऐसा पल जब जनजातीय समाज और अन्य समाज एक साथ खड़े होंगे, एक-दूसरे को समझेंगे, सम्मान देंगे और साझा भविष्य का निर्माण करेंगे।

जनजाति समाज के लिए 'यादगार पल' क्यों?

यादगार पल' इसलिए क्योंकि आज के इस दिन आदिवासी समाज की जातिगत अलगाव-तल से निकलने की यात्रा को दस्तावेजित करता है।उनके हीरो को राष्ट्रीय मंच पर मान्यता मिल रही है । बिरसा मुंडा जैसे नायकों को आदिवासी समाज का प्रतीक और पूरे देश की प्रेरणा माना जा रहा है।गुजरात जैसे विविध राज्य में आदिवासी कार्यक्रम होने से यह संकेत मिलता है कि जनजाति-विषय सिर्फ खास-क्षेत्रीय नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत का विषय बन रहा है। कार्यक्रमों के माध्यम से समाजिक समावेशिता, संस्कृति-पुनरुद्धार, युवाओं को सशक्त बनाने का अवसर मिल रहा है।और सबसे बड़ी बात है कि यह संस्कृति-उत्सव है। हम सिर्फ इतिहास याद नहीं कर रहे, बल्कि एक उत्सव-भावना के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा ले रहे हैं।भविष्य की दिशा तय होगी। आदिवासी समाज का सशक्तिकरण बिरसा मुंडा ने जिस स्वराज-सपने को देखा था अबुआ राज, अबुआ दिशुम' हमारा राज्य, हमारी दिशा आज उसका स्वरूप कुछ अलग है पर संकल्प वही है।आदिवासी समाज को सम्मान, अधिकार, अवसर मिलें। वक्त की मांग है कि कार्यक्रमों से निकलकर वास्तविक क्रियान्वयन हो।आदिवासी युवाओं को शिक्षा-स्वास्थ्य-रोज़गार के अवसर मिले। उनकी कलाएँ-हस्त-शिल्प सुरक्षित, समृद्ध हों।जमीन-वन-जल के अधिकार सुनिश्चित हों। उनके

अनुभव, ज्ञान-परंपरा को आधुनिक विकास के साथ जोड़ने की पहल हो। समाज में आदिवासी-विभाग के प्रति पूर्वाग्रह कम हो, समावेश बढ़े।यदि आज का कार्यक्रम 'यादगार पल' बनाना है, तो उसके बाद कल का परिवर्तन भी जरूरी है। आदिवासी समाज के लिए यह सिर्फ एक दिन नहीं, यह एक संकल्प-प्रारंभ होना चाहिए। आज, जब हम बिरसा मुंडा की जयंती पर एक बड़े सांस्कृतिक समागम में जुट रहे हैं।जहाँ मोदी-सराहना होंगी, आदिवासी-कलाएँ होंगी, युवाओं का उत्साह दिखेगा, तो हमें यह याद रखना है कि यह केवल उत्सव नहीं है, बल्कि उत्तरदायित्व है।हमारा उत्तरदायित्व है कि इस यादगार पल को हम यादगार असर में बदलें।आदिवासी समाज की गरिमा, उनके योगदान, उनकी आकांक्षाओं को समस्त भारत के विकास-सफर में सुदृढ़ करें। इसलिए इस 15 नवंबर को आइए हम न सिर्फ बिरसा मुंडा को याद करें, बल्कि उनके उस सपने को पुनः संकल्प करें। जहाँ आदिवासी समाज अपने अधिकारों, अपनी संस्कृति, अपनी पहचान के साथ आगे बढ़े। जहाँ गुजरात में आयोजित ये कार्यक्रम सिर्फ एक आयोजन नहीं रहे, बल्कि आने वाले वर्षों के लिए राह-निर्देशक बने। शत्-शत् प्रणाम 'धरती आबा' को और आदिवासी समाज को सलाम, जिन्होंने हमें सिखाया कि स्वाभिमान के साथ इतिहास बनता है।

कांतिलाल मांडोत

संपादकीय

गुजरात के डेडियापडा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भव्य आदिवासी समागम

भारत के राजनीतिक परिदृश्य में आदिवासी समाज की भूमिका आज पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। जनजातीय पहचान, अस्मिता, अधिकार और विकास ये सभी मुद्दे अब राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में हैं। इसी पृष्ठभूमि में गुजरात के डेडियापडा में आयोजित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भव्य कार्यक्रम न केवल एक सांस्कृतिक उत्सव था, बल्कि यह आदिवासी गौरव और राष्ट्रीय सम्मान का सम्मिलित चित्र भी प्रस्तुत करता है।बीरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में मोदी ने जनजातीय परंपराओं, पोशाकों और नायकों को गौरवमयी स्थान दिया। विशेष रूप से, जब मोदी ने स्वयं आदिवासी पारंपरिक पोशाक धारण कर बिरसा मुंडा को नमन किया, तब पूरा वातावरण भावनात्मक और उत्साह से भर उठा। बीरसा मुंडा को श्रद्धांजलि आदिवासी गौरव का राष्ट्रीय प्रतीक है।मोदी ने कहा कि बीरसा मुंडा केवल एक जनजातीय नायक नहीं, बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा हैं।उनका अग्रसक्रिय योगदान, संघर्ष और जनजागरण ने ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी थी। उन्होंने अत्याचारों का विरोध किया, उलगुलान यानी महान क्रांति का नेतृत्व किया और अपने अल्प जीवन में वह कर दिखाया जो कई पीढ़ियाँ नहीं कर पातीं।मोदी ने मंच से स्पष्ट कहा कि आदिवासी समाज ने देश का मान, सम्मान और संस्कृति को जिंदा रखा है। भारत का इतिहास आदिवासी वीरता के बिना अधूरा है।ये शब्द केवल प्रशंसा नहीं थे, बल्कि वर्षों से मुख्यधारा इतिहास में उपेक्षित आदिवासी योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता देने का एक सशक्त संदेश था। आदिवासी पोशाक में मोदी का संदेश प्रतीकात्मक नहीं, आत्मीय था।प्रधानमंत्री मोदी ने कार्यक्रम में आदिवासी पारंपरिक वेशभूषा धारण की। यह केवल प्रतीकात्मक कदम नहीं था, बल्कि यह आदिवासी संस्कृति के प्रति सम्मान, आत्मीयता और कृतज्ञता का भाव था। हजारों आदिवासी भाई-बहन अपने पारंपरिक नृत्य, गीत और परिधानों में उपस्थित थे। जब उन्होंने देखा कि देश का प्रधानमंत्री उनके रूप में, उनकी भाषा और उनके चिह्नों के साथ मंच पर खड़ा है, तो यह पल उनके लिए गर्व का क्षण बन गया।मोदी का यह कदम संदेश देता है कि आदिवासी केवल वोटबैंक नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के केंद्र में हैं। चार किलोमीटर का विशाल रोड शो जनसमर्थन का सागर झलक उठा।डेडियापडा में पीएम मोदी का लगभग 4 किलोमीटर लंबा रोड शो अभूतपूर्व रहा। हजारों-लाखों लोग सड़क के दोनों ओर खड़े थे। महिलाओं, युवाओं, बुज़ुर्गों और बच्चों ने पारंपरिक संगीत, ढोल और लोकगीतों के साथ प्रधानमंत्री का स्वागत किया।कई स्थानों पर लोगों ने फूल वर्षा की, कहीं ढोल-नगाड़ों से स्वागत हुआ, तो कहीं जनजातीय नृत्य मंडलियों ने रोड शो को उत्सव में बदल दिया।यह जनसमर्थन यह दर्शाता है कि आदिवासी समाज के दिल में मोदी सरकार के प्रति गहरा विश्वास और भावनात्मक जुड़ाव है।कांग्रेस पर प्रहार किया। स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी योगदान की उपेक्षा का आरोप अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने दशकों तक आदिवासी वीरों के योगदान को इतिहास से मिटाया। जिन आदिवासियों ने अंग्रेजों से सीधे संघर्ष किए, उनकी बात तक किताबों में नहीं लिखी गई।मोदी की यह टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आजादी के संघर्ष में बिरसा मुंडा, टांट्या भील, सिद्धो-कान्हू, रानी दुर्गावती, रानी गाइडिनल्यू जैसी असंख्य जनजातीय हस्तियों को लंबे समय तक मुख्यधारा इतिहास-लेखन में स्थान नहीं मिला।मोदी ने यह भी कहा कि– कांग्रेस केवल अपने नेताओं का महिमामंडन करती रही, आदिवासी बलिदानी इतिहास को छिपाया।इस बयान का संदेश साफ था कि आदिवासी वोटबैंक को सम्मान के साथ जोड़ने की राजनीति कांग्रेस नहीं कर सकी, वहीं भाजपा ने इसे अपनी प्राथमिकता बनाई।

बुलेट ट्रेन और जनजातीय क्षेत्रों का विकास नये युग की ओर कदम है।मोदी ने भाषण में बुलेट ट्रेन परियोजना का भी उल्लेकिया। उन्होंने कहा कि आधुनिक बुनियादी ढांचा, रेलवे और हाईस्पीड ट्रेनों का लाभ अब आदिवासी क्षेत्रों तक पहुँचेगा। हालाँकि बुलेट ट्रेन का सीधा मार्ग हर जनजातीय क्षेत्र को नहीं छूता, परंतु इससे जुड़े रोजगार, उद्योग, पर्यटन और परिवहन सुधार का लाभ अप्रत्यक्ष रूप से आदिवासी समाज तक पहुँचेगा। उन्होंने कहा कि विकास का लाभ समाज के अंतिम छोर पर बैठे लोगों तक पहुँचना चाहिए। आदिवासी क्षेत्र अब पिछड़े नहीं, बल्कि नए भारत की प्रगति के केंद्र बनेंगे।आदिवासी समाज को भाजपा के समर्थन का बढ़ता आधार है और मोदी के इस दौरे से यह भी स्पष्ट हो गया कि भाजपा आदिवासी समाज को राजनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण मानती है। गुजरात, मध्य प्रदेश, झारखंड, राजस्थान, छत्तीसगढ़ इन सभी राज्यों में आदिवासी मतदाता निर्णायक हैं। भाजपा की रणनीति स्पष्ट है कि पहचान, सम्मान, विकास और सांस्कृतिक गौरव को राजनीतिक सशक्तिकरण से जोड़ना होगा। मोदी द्वारा आदिवासी पोशाक पहनना, बिरसा मुंडा की पूजा, आदिवासी वीरों को याद करना, उनके त्योहारों को राष्ट्रीय पहचान देना,यह सब भाजपा को आदिवासी समाज से गहरा समर्थन दिला रहा है। मोदी सरकार ने आदिवासी क्षेत्रों में ईको-टूरिज्मवन उत्पादों का MSP वन धन केंद्र प्रधानमंत्री आदिवासी विकास मिशन आदिवासी छात्रों के लिए एकलव्य मॉडल स्कूल जैसी योजनाओं के माध्यम से विकास को जमीनी स्तर तक पहुँचाया।इससे जनजातीय क्षेत्रों में भाजपा की लोकप्रियता लगातार बढ़ी है। कांग्रेस की तुलना में भाजपा की छवि अधिक प्रभावी बनी है। कार्यक्रम का सबसे बड़ा राजनीतिक संदेश यही था कि आदिवासी समाज भाजपा को अपने हितैषी और निकटतम मानता है।जहाँ कांग्रेस को अक्सर यह कहा जाता है कि उसने आदिवासी इलाकों का चुनावी उपयोग किया, वहीं मोदी सरकार ने विकास और सम्मान को प्राथमिकता दी है। मोदी ने स्पष्ट कहा कि कांग्रेस ने आदिवासी समाज को गरीबी में रखा, जबकि भाजपा उन्हें सम्मान और अवसर दे रही है। डेडियापडा का समागम आदिवासी राजनीति की नई दिशा दी गई।डेडियापडा में हुआ समारोह केवल एक चुनावी रणनीति नहीं था यह आदिवासी समाज के प्रति राष्ट्रीय राजनीति की बदलती संवेदना का संकेत था।यह दिखाता है कि भारत की राजनीतिक दिशा अब केवल सत्ता-गणित पर आधारित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक गौरव, इतिहास और पहचान पर भी आधारित है।मोदी की इस यात्रा से ये संदेश निकले कि आदिवासी गौरव अब भारत की राष्ट्रीय पहचान का हिस्सा है। प्रधानमंत्री की प्राथमिकताओं में जनजातीय समाज सबसे ऊपर है। कांग्रेस की तुलनात्मक आलोचना भाजपा के पक्ष में राजनीतिक माहौल मजबूत करती है। विकास योजनाएँ और सांस्कृतिक सम्मान दोनों को संतुलित रूप में पेश किया गया। 2025-2026 के चुनावों में आदिवासी समाज निर्णायक भूमिका निभाएगा।डेडियापडा कार्यक्रम आदिवासी गौरव और राष्ट्रीय नेतृत्व का ऐतिहासिक संगम है।प्रधानमंत्री मोदी का डेडियापडा दौरा सिर्फ एक राजनीतिक रैली नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक घोषणा थी।यह भारत के उस परिवर्तन की तस्वीर है जहाँ आदिवासी समाज को समाज के केंद्र में लाकर उनके योगदान को सम्मान दिया जा रहा है।

बीरसा मुंडा के प्रति सम्मान, आदिवासी पहनावे में प्रधानमंत्री की उपस्थिति, चार किलोमीटर का जनसैलाब रोड शो, कांग्रेस पर प्रहार, बुलेट ट्रेन जैसे बड़े बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का उल्लेख और आदिवासी समाज को भाजपा से मिलने वाला लाभ इन सभी ने मिलकर इस कार्यक्रम को ऐतिहासिक बना दिया। यह स्पष्ट है कि भाजपा की आदिवासी नीति केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक है। और यही वह सूत्र है जिससे आदिवासी समाज का समर्थन भाजपा के पक्ष में और मजबूत हो रहा है।

कांतिलाल मांडोत

यह कैसा रील कल्चर है जो नैतिकता तोड़ रहा है

यह सच है कि आज जमाना उस टैक्नोलॉजी का है जो सोशल मीडिया के रूप में देश और दुनिया पर हावी हो रहा है। कल तक लोग अखबारों में खबर छपने के बाद किसी घटना या इवेंट को लेकर जब चर्चा किया करते थे तो वह बड़ी सजीव और सकारात्मक हुआ करती थी, लेकिन जिस तरह से आज सोशल मीडिया चीजों को विशेष रूप से घटनाओं और इवेंट को प्रस्तुत कर रहा है उसका इम्पेक्ट एक होड़ को जन्म देता है। जो लोग सोशल मीडिया जैसे प्रोफेशन से जुड़े हैं वे आजकल रील बनाने का काम कर रहे हैं। रील बनाना हर किसी के जीवन में एक खास जगह बना रहा है। हालांकि रील बनाते समय आजकल नैतिकता की हदें भी पार की जा रही हैं, जो कि हमारे उस संस्कारों के खिलाफ है जिसे हम मान-मर्यादा और इज्जत के साथ जोड़ते हैं। केवल प्रसिद्धि पाने के लिए, केवल अपना लाभ कमाने के लिए और जहां कोई न पहुंचे वहां आप अपने आपको प्रदर्शित करने के लिए जब रील बनाते हैं तो आप लोग नैतिकता को दरकिनार कर रहे हैं। विशेषज्ञों ने कहा है कि रील बनाने का कल्चर विशेष रूप से यूथ में सारी नैतिकताओं की हदें तोड़ चुका है और समाज पर इसके बहुत बुरे प्रभाव पड़ रहे हैं। मैं जब कभी सोशल मीडिया के तहत फेसबुक, इंस्टाग्राम देखती हूं तो साधारण घरों की लड़कियां अनेक गानों की धुन पर डांस करती दिखाई देती हैं। डांस करने में कोई बुराई नहीं लेकिन जब आप अश्लीलता भरे डांस करेंगे तो यह मर्यादा का हनन है। किसी भी पुल के ऊपर से नदी में लड़के और लड़की का छलांग लगाना और अश्लील गानों पर थिरकते हुए रील बनाना यह सब मर्यादा का हनन है। दिल्ली की चलती मैट्रो में एक लड़की अश्लीलता भरा डांस कर रही है। इस रील के ?लिए लड़की अपनी शर्ट के बटन खोलकर लाइक्स किए जाने की अपील कर रही है। इन्हीं रीलों में कमेंट करने की गुजारिश की जाती है जिनसे रील बनाने वालों के व्यूज बढ़ते हैं। इन्हें देख-देख कर कई और लड़कियां ऐसी ही रीलें सोशल मीडिया पर डाल रही हैं। टीवी पर जब ऐसे डिबेट देखती

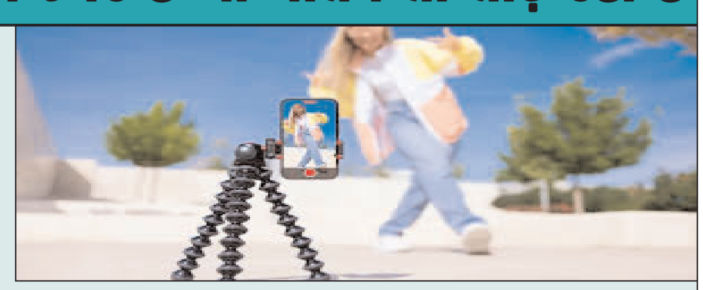

हूं तो कितने ही दृश्यों को देखकर आंखें शर्म से झुक जाती हैं कि ये हमारे समाज को क्या हो गया है। मेरा यह मानना है कि जब विज्ञान ने हमें टैक्नोलॉजी दी है और अनेक लोग रील बनाने के प्रोफेशन से जुड़े भी हैं लेकिन सामाजिक जीवन में रील बनाने को एक कल्चर के रूप में जिस तरह से यूथ ने स्थापित किया है वह एक सामाजिक बुराई के रूप में उभर रहा है और नैतिक सिद्धांतों का सम्मान भी किया जाना जरूरी है। रीलों की दुनिया में तेजी से वायरल होने की होड़ और किसी भी ट्रेंड को फॉलो करने के लिए किसी भी हद तक चले जाना हमारे समाज के लिए घातक है।

केवल व्यूज और लाइक के लिए अगर कोई लड़की अस्पताल में ग्लैमरस ढंग से नाचती है या मंदिर में लोगों की लाइनों के बीच में या किसी भी मॉल में या किसी भी सिनेमा के सामने अश्लील नृत्य करती है और उसे बदले में व्यूज और लाइक ही चाहिए तो ऐसी रील बनाने का क्या फायदा जो नैतिकता को अपने पांव तले रौंदती हो। इस संबंध में कड़े नियम लागू करने व सजा का प्रावधान सुनिश्चित करना होगा। यही नहीं कई रीलें स्वास्थ्य को लेकर बनाई जाती हैं, उनको फॉलो करके भी कई लोग बीमार हुए, कई घर के वास्तु ठीक करने के लिए बनाई जाती हैं। वो बहुत लोगों को परेशान कर रही हैं। कई रीलें ज्यो?तिष के चक्र में बनती हैं, कई रीलें घर में पैसे की बरकत या घर में सुख-समृद्धि बढ़े, उसके लिए बनती हैं। सब रीलों ने आम व्यक्तियों को कई चक्करों में डाल रखा है। मेरे हिसाब से रीलें बनाने या सोशल मीडिया पर कुछ भी डालने के लिए नियम कानून बनने चाहिएं ताकि आम आदमी परेशान होने से बच सके। इस मामले में मेरा माता-पिता से भी अनुरोध है कि बच्चों को मोबाइल के सदुपयोग के लिए समझाएं और उन्हें बताएं कि कोई भी वीडियो बनाने से पहले उसमें कोई ऐसी रील न प्रस्तुत करें जिसमें गलत प्रभाव पड़ता हो। दूसरों का सम्मान करें, कानून का पालन करें और किसी के बारे में गलत कमेंट न करें। छात्रों के एक ग्रुप ने सहपाठी छात्राओं के फोटो खींच लिए और उनकी फिगर को लेकर कमेंट करने शुरू कर दिए और इसके लिए लाइक्स और व्यूज मांगे गए तो यह लाखों में थे, कुछ लड़कियों के माता-पिता ने पुलिस में शिकायत की तो यह एक्शन हुआ और यह ग्रुप बंद कर दिया गया। यह कोई कल्पना नहीं बल्कि राजधानी दिल्ली से जुड़ी एक घटना है। हमें एक-दूसरे पर विश्वास बनाने के लिए रील बनानी चाहिए। आज की तारीख में जिस तरह से अनेक छोटे-बड़े चैनल चाहे वह यूट्यूब से जुड़े हैं या खुद के व्हाट्सऐप हैं सनसनीखेज सामग्री डालने से बचना चाहिए। यह देश ऋषि-मुनियों, देवताओं और भगवान का देश है जहां से अच्छे संस्कारों की गंगोत्री बहती है। दुनिया भारत को एक संस्कारवान राष्ट्र मानती है लेकिन जागरूकता की कमी में रील बनाना वह गलत प्रभाव डाल सकता है और समाज पर नकारात्मक असर पड़ता है। इसलिए इस गंभीर और संवेदनशील मुद्दे पर मेरी यही विनती है कि नैतिकता का सम्मान किया जाए और भारत की शान जो संस्कारों पर टिकी है उसका पालन किया जाना चाहिए। महज व्यूज और लाइक के लिए सार्वजनिक स्थलों पर अपने आपको गलत तरीके से प्रस्तुत करते हुए रील मेकिंग कल्चर पर पूर्ण विराम लग जाना चाहिए।

किरण चोपड़ा

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254,E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

विधिक परामर्श केंद्र का हुआ शुभारम्भ

लालगंज, रायबरेली। नगर के आचार्य नगर निवासी युवा अधिवक्ता सौरभ सिंह के स्थानीय कार्यालय (विधिक परामर्श केंद्र) का शुभारम्भ एसडीएम लालगंज द्वारा किया गया। इस अवसर पर एसडीएम ने वकालत को जनसेवा का कार्य बताते हुए कहा कि देश की आजादी में भी अधिकांश महान क्रांतिकारी वकालत से जुड़े रहे और समाज सेवा के लिए सदैव प्रेरणा बने।युवा अधिवक्ता सौरभ सिंह ने लखनऊ विश्वविद्यालय से एलएलबी की उपाधि प्राप्त की है और वर्तमान में लखनऊ हाईकोर्ट में प्रैक्टिस कर रहे हैं। क्षेत्रीय नागरिकों की इच्छा पर उन्होंने स्थानीय स्तर पर विधिक परामर्श केंद्र की शुरुआत की, ताकि आमजन को क्षेत्र में ही सुलभ व गुणवत्तापूर्ण कानूनी सलाह मिल सके।उद्घाटन कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ. विनय भदौरिया, उमेश बहादुर सिंह, भैरव सिंह प्रधान बेहटा, शिवम सिंह, राहुल भदौरिया, विशाल मणि त्रिपाठी, दिलीप कुमार सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।अधिवक्ता सौरभ सिंह ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

मांगों को लेकर लेखपालों ने मुख्यमंत्री को भेजा गया ज्ञापन

लालगंज (रायबरेली)। उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ के आह्वान पर शनिवार को तहसील में लेखपालों ने धरना दिया। सभी लेखपाल अपनी लंबित मांगों को लेकर जुटे। बाद में एडीएम वित्त एवं राजस्व अमृता सिंह को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया।तहसील संघ महामंत्री उमाकांत तिवारी ने बताया कि पिछले 9 वर्षों से कई मांगें लंबित हैं। इनमें शैक्षणिक योग्यता में सुधार, पदनाम परिवर्तन, प्रारंभिक वेतनमान बढ़ोतरी और मृतक आश्रितों की पेंशन संबंधी विसंगतियों का समाधान शामिल है। स्टेशनरी भत्ता, मोटरसाइकिल भत्ता और विशेष वेतन भत्ता बढ़ाने की मांग भी दोहराई गई। उन्होंने कहा कि शासनादेश और कई पत्राचार के बावजूद समस्याओं का समाधान नहीं हुआ है। तीन हजार से अधिक लेखपाल अपने परिवारों से दूर तनाव में नौकरी कर रहे हैं। 2018 के अंतर्मंडलीय स्थानांतरण आदेश में ऑनलाइन आवेदन लेने के बाद भी सूची जारी नहीं की गई। संघ ने यह भी आरोप लगाया कि राजस्व निरीक्षक पदों पर डीपीसी लंबित है। अधिकारियों द्वारा नियमित मासिक बैठकें नहीं की जा रहीं। समस्याएं सुनने के बजाय दबाव बनाया जाता है।उमाकांत तिवारी ने बताया कि 5 अक्टूबर की प्रांतीय बैठक में आंदोलन का निर्णय लिया गया था। एक नवंबर को मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया गया। समाधान न मिलने पर 15 नवंबर से धरना शुरू किया गया। लेखपालों ने ग्रेड पे 2800 लागू करने और संवर्ग को तकनीकी घोषित करने की मांग की। धरने में उमाकांत तिवारी, मनमोहन पांडेय, जितेंद्र बहादुर सिंह, अमर बहादुर सिंह, आशीष सिंह, प्रियम पांडेय, अनुपम सिंह, अनामिका सिंह, प्रतिभा, प्रियंका निर्मल समेत कई लेखपाल मौजूद रहे।

श्रीराम मंदिर ध्वजारोहण को लेकर लखनऊ में विहिप की हुई विशेष बैठक

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के निराला नगर में स्थित भारतीय शिक्षा संस्थान के मीटिंग हॉल में विश्व हिंदू परिषद अवध प्रांत की विशेष बैठक संपन्न हुई। मंच पर विश्व हिंदू परिषद के प्रांत अध्यक्ष कन्हैया लाल अग्रवाल, प्रांत संगठन मंत्री विजय प्रताप, प्रांत मंत्री देवेंद्र प्रांत,सह मंत्री अविनाश,प्रवीण एवं विवेक मौजूद रहे। आमंत्रित विशेष बैठक में विश्व हिंदू परिषद के प्रांतीय विभाग एवं जिलों के पदाधिकारी से प्रांत संगठन मंत्री विजय प्रताप ने संगठन के कई विशेष कार्यों को बताया मुख्य रूप बैठक का मुख्य उद्देश्य राम मंदिर के भव्य ध्वजारोहण समारोह को सफलतापूर्वक संपन्न कराना था। जिसमें विहिप सदस्यों को स्वागत, आवास, सुरक्षा और परिवहन जैसी जिम्मेदारियां सौंपी और बताया आयोजन सिर्फ एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सशक्त, संगठित और जागरूक हिंदू समाज के निर्माण का प्रतीक है। बैठक में अन्य दो बिंदुओं धर्म रक्षा निधि और प्रखंड स्तर पर ग्राम पंचायतों में कार्यकर्ता निर्माण पर भी चर्चा की गई।

तहसील समाधान दिवस में उठा जन्म प्रमाण पत्र में हीला-हवाली और जर्जर रास्तों का मुद्दा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मलिहाबाद। तहसील समाधान दिवस को अपर जिलाधिकारी (एडीएम) ज्योति आपूर्ति की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस दौरान तहसील क्षेत्र से अवैध कब्जों, जर्जर रास्तों, और राशन कार्ड से जुड़ी अनेक शिकायतें आईं, लेकिन सबसे ज़्यादा परेशानी लोगों को जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने में हो रही हीला-हवाली को लेकर थी।

शिकायतों के अंबार के बीच, सहिलामऊ निवासी कामिल ने अपनी आपबीती सुनाई। उन्होंने बताया कि उन्होंने 15 अक्टूबर को जन्म प्रमाण पत्र के लिए आवेदन किया था, लेकिन लगभग एक माह बीत जाने के बाद भी प्रमाण पत्र जारी नहीं किया गया है। उन्होंने यह भी शिकायत की कि सचिव ग्राम प्रधान को अपने पैड पर जन्म प्रमाण पत्र न लिखने की बात कहते हैं, जबकि ग्राम सभा में तैनात सचिव गांव में कभी आते ही नहीं हैं।लंबा समय लगने से बढ़ी परेशानी कामिल की शिकायत से यह बात सामने आई कि आमजन भी प्रमाण पत्र बनवाने में विभाग की मनमानी से जूझ रहे हैं। लोगों का कहना है कि जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने में अक्सर एक से लेकर छह माह तक का लंबा समय लग जाता है, जिससे लोगों को भारी समस्या का सामना करना पड़ता है।

जर्जर मार्ग से आवागमन बाधित

एक अन्य प्रमुख शिकायत दुलारमऊ भुलसी मार्ग से दतली मेले और माता देवी मंदिर को जाने वाले रास्ते को लेकर थी। यूसुफ खां ने शिकायती पत्र देते हुए बताया कि यह मार्ग अत्यंत जर्जर और बदहाल है। मार्ग खराब होने के कारण आवागमन करने वालों को रोज़ाना समस्या होती है, जो बारिश के मौसम में और भी विकराल रूप ले लेती है। इसी रास्ते से लोग दतली मेले और माता देवी मंदिर जाते हैं, जिससे भक्तों और स्थानीय लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

समाधान दिवस में एसडीएम अंकित कुमार, एसीपी सुजीत कुमार दुबे, तहसीलदार और अन्य विभागों के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। एडीएम ने सभी शिकायतों को गंभीरता से सुना और संबंधित विभागों के अधिकारियों को त्वरित और समयबद्ध निस्तारण के निर्देश दिए।

मरकरी कॉन्वेंट हाई स्कूल में धूमधाम से मनाया गया बाल दिवस

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के मर्करी कॉन्वेंट हाई स्कूल नीलमथा लखनऊ के प्रांगण में पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू उर्फ चाचा नेहरू के जन्मदिवस पर खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित हुई, नन्हे मुन्ने बच्चों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि डॉ0 दीपक कपूर संस्थापक उठो इंडिया जागो, ने नेहरू जी के चित्र पर पुष्प श्रद्धांजलि अर्पित कर खेल कूद प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। विजेता उप विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। मर्करी कॉन्वेंट हाई स्कूल के प्रबंधक रंजीत सिंह ने दीपक कपूर को पुष्पमाला पहनकर और पौधा देकर स्वागत किया इसी क्रम में भारत भूषण एवं गुरविंदर जीत सिंह ने पौधा भेंट कर मुख्य अतिथि का स्वागत ही नहीं किया बल्कि पौधा भेंट कर नई परंपरा की शुरुआत की इस अवसर पर सभी शिक्षक, अभिभावक भी मौजूद रहे।

बिहार में एनडीए की प्रचंड जीत पर,भाजपा कार्यकर्ताओं ने मनाया विजय उत्सव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे में शनिवार को बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन की ऐतिहासिक जीत से उत्साहित लालगंज नगर में भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार उत्सव मनाया। मंडल अध्यक्ष मनोज अवस्थी की अगुवाई में कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों की थाप पर भांगड़ा किया, पटाखे फोड़े और एक-दूसरे को मिष्ठान खिलाकर जीत की बधाइयाँ दीं। पूरे नगर में जश्न का माहौल देखने को मिला।मंडल अध्यक्ष मनोज अवस्थी ने कहा कि 'बिहार की जीत जनता की जीत है, सुशासन और विकास की जीत है। महागठबंधन के खिलाफ बिहार की जनता ने एनडीए को स्पष्ट बहुमत देकर ऐतिहासिक विजय श्री दिलाई है। 'उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सबका साथ, सबका विकास के विजन ने बिहार में जनसमर्थन को मजबूत किया। साथ ही गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सभाओं का भी भाजपा को बड़ा लाभ मिला।मनोज अवस्थी ने विश्वास जताया कि '2027 में उत्तर प्रदेश में भी भाजपा बंपर जीत दर्ज करेगी। 'विजय उत्सव के दौरान बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे। इनमें प्रमुख रूप से– मंडल उपाध्यक्ष अखिलेश बाजपेई, राजेश निर्मल,सुरेंद्र कुमार गुप्ता, शीतला सविता, सपना पासवान, मंडल महामंत्री सत्येंद्र सिंह फौजी, मंडल मंत्री गिरिजा शंकर, शानू बाजपेई, अवधेश सविता,किरण वर्मा, मंडल कोषाध्यक्ष महेश सोनी, शक्ति केंद्र संयोजक आलोक तिवारी, विमल धानुक, मृत्युंजय बाजपेई, मयंक त्रिवेदी, राम शंकर,पवन कुमार त्रिवेदी सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पुलिस मुठभेड़ में एक बदमाश को लगीं गोली, तीन बदमाश चढ़े पुलिस के हत्थे

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के फतेहपुर रोड पर अंबारा पश्चिम मोड़ के निकट शुक्रवार की रात को पुलिस मुठभेड़ में एक बदमाश को गोली लग गई। जबकि उसके दो साथियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। घायल बदमाश को इलाज के लिए सीएचसी से जिला अस्पताल रेफर किया गया। पुलिस ने शुक्रवार की रात बहाई चौकी के आगे डलमऊ रोड पर चेकिंग के दौरान तीन संदिग्ध युवकों को पकड़ने की कोशिश की। पुलिस को देखकर तीनों मोटरसाइकिल सवार भागने लगे। पीछा करने पर अम्बरा पश्चिम मोड़ के पास उनकी बाइक फिसल गई। इससे मुंगेर बिहार का रहने वाला चिंटू पुत्र मनोहर शाह और भागलपुर बिहार का रहने वाला करन उर्फ अमन कुमार पुत्र कामदेव शाह को पुलिस ने मौके पर ही दबोच लिया। मुंगेर बिहार का ही रहने वाला रितिक पुत्र दीपक शाह ने भागने के दौरान पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में रितिक के बाएं पैर में गोली लगी। उसे तुरंत सीएचसी ले जाया गया। जहां से हालत को देखते हुए जिला अस्पताल रेफर किया गया। पुलिस ने रितिक के कब्जे से एक 315 बोर का तमंचा, एक खोखा, एक मिस कारतूस और 21 हजार रुपये नकद बरामद किए। आरोपियों के पास एक जोड़ी सहारा सहित कान का झुमका भी मिला है। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि यह गैंग चोरी और लूट की वारदातों में शामिल रहा है। कुछ दिन पहले आचार्य नगर में गहने साफ करने के बहाने एक महिला के कीमती झुमके उड़ाने की वारदात इन्हीं ने की थी। इसके अलावा शांति नगर बाईपास में बैंक से रुपये निकालकर लौट रही महिला को रोककर उसके गहने लेकर फरार होने की घटना में भी यही बदमाश शामिल थे। पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। उनके आपराधिक इतिहास की जांच की जा रही है।

पार्षद ने बांटी मिठाई जीत की खुशी में झूमे कार्यकर्ता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के चिनहट प्रथम वार्ड अंतर्गत स्थित पार्षद कार्यालय पर भारतीय जनता पार्टी की बिहार में प्रचंड जीत से खुश होकर पार्षद कार्यालय पर कार्यकर्ताओं ने ढोल नगाड़े के साथ नाचते हुए खुशी का इजहार किया। इस मौके पर भारतीय जनता पार्टी के चिनहट शहरी मंडल अध्यक्ष कमल पांडे तथा पार्षद अरुण राय भी नृत्य करते नजर आए। मिठाई खिलाकर एक दूसरे का मुंह मीठा किया गया साथ ही इस अवसर पर चिनहट के पूर्व पार्षद बब्बन महिला नेता अल्लाहरखी, विनीता लखमानी मंडल उपाध्यक्ष नरेंद्र श्रीवास्तव मंडल मंत्री अनिल सोनी वरिष्ठ भाजपा नेता बृजराज शर्मा भूपेश वर्मा लकी यादव अनिल यादव प्रदीप कुमार बजराय लकी एवं मिथुन समेत सैकड़ो की संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

लखनऊ में एक तकनीकी वार्ता का आयोजन किया गया। इस वार्ता का विषय था भारत में स्टार्टअप क्रांतिः औद्योगिक विकास की राह

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. मोहम्मद उसामा, मैनेजर (स्ट्रैटेजिक अलायंस), NEMI थे। उन्होंने भारत को विकसित बनाने में स्टार्टअप क्रांति और औद्योगिक विकास के बीच संबंध पर अपने विचार प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन इकॉनमी के लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारत में बढ़ती स्टार्टअप संस्कृति नवाचार, तकनीकी प्रगति और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतीक है। NEMI Education, जिसकी स्थापना अक्षय बजपेयी द्वारा की गई है और जो Amskills Ecademy Pvt. Ltd. का प्रमुख ब्रांड है, भारत के सबसे तेज़ी से बढ़ते करियर-उन्मुख स्किल-डेवलपमेंट प्लेटफॉर्म्स में से एक है। यह IIT Indore-Drishti CPS Foundation और U.P. Innovation Hub द्वारा समर्थित है, जो इसकी विश्वसनीयता और उद्योग-अकादमिक सामर्थ्य को दर्शाता है। अपने संस्थापक की दूरदर्शी नेतृत्व भावना के अंतर्गत, NEMI तकनीक, स्वास्थ्य, वित्त और उभरते क्षेत्रों में उच्च-प्रभावी प्रमाणपत्र एवं प्रोफेशनल कार्यक्रम प्रदान करता है, विशेष रूप से टियर-2 और टियर-3 शहरों के युवाओं के लिए प्लेसमेंट और उद्योग-अनुकूल शिक्षण पर केंद्रित है। राष्ट्रीय मंच पर NEMI का प्रतिनिधित्व करते हुए, प्रो. मोहम्मद उसामा ने 'भारत में स्टार्टअप क्रांति- औद्योगिक विकास की राह' पर अपने विचार प्रस्तुत किए और बताया कि कैसे स्टार्टअप्स, नवाचार आधारित इकोसिस्टम और ह्श्वख्ह्ण जैसे कौशल-प्रधान संस्थान भारत के औद्योगिक एवं आर्थिक भविष्य को आकार दे रहे हैं। उन्होने कार्यक्रम की आवश्यकता एवं लाभ की भी जानकारी दी जो इस प्रकार से है। 1. नवाचार को प्रोत्साहनः यह कार्यक्रम युवाओं और अभियंताओं को नए विचारों व तकनीकी नवाचारों के प्रति प्रेरित करता है। 2. रोज़गार सृजन में सहयोगः स्टार्टअप संस्कृति से नए उद्योगों का विकास होता है, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

3. आत्मनिर्भर भारत की दिशा में कदमः स्टार्टअप और औद्योगिक विकास भारत को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हैं।

4. तकनीकी ज्ञान और उद्योग की समझः ऐसे आयोजनों से प्रतिभागियों को आधुनिक औद्योगिक तकनीकों और व्यावसायिक नीतियों की जानकारी मिलती है। 5. उद्योग और शिक्षा के बीच समन्वयः प्रोफेशनल्स, अभियंता और छात्र एक साझा मंच पर आकर अनुभव और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। 6. राष्ट्रीय विकास में योगदानः स्टार्टअप्स देश की अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान करते हैं और औद्योगिक विकास में सीधा योगदान देते हैं। कार्यक्रम की शुरुआत में संस्थान के आईपी चेयरमैन एवं काउंसिल सदस्य ई. मसरंत नूर खान ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के संयोजक इं. राजेश श्रीवास्तव (Elect) स्ष्टष्ट स्न्द्बद्बङ्घद्दह्व ने विषय की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसे तकनीकी वार्तालाप इंजीनियरों और युवा मस्तिष्कों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं मानवीय संवेदनशीलता को सशक्त बनाते हैं। इस कार्यक्रम की शोभा कई प्रतिष्ठित अभियंताओं और परिषद सदस्यों की उपस्थिति से बढ़ी, जिनमें शामिल थे-इं. एन. के. निषाद, (निर्वाचित मानद सचिव, एफ.आई.ई. सदस्य), इं एन. सी. मित्तल (एफ.आई.ई. सदस्य), इं.जे बी सिंह (सदस्य), इं. राधेश्याम (सदस्य), इं. एल. जी. पी. सिंह (सदस्य), इं. जे. एम. एल. जायसवाल (सदस्य), इं. केशव डीओ (सदस्य), इं. एच एस मौर्य (सदस्य), इं. जी. एम. पांडेय (एफ.आई.ई. सदस्य), और इं. जमाल नुसरत (एफ.आई.ई. सदस्य)। अंत में संस्था के मानद सचिव ई. विजय प्रताप सिंह ने सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

डीएम-एसपी ने तहसील महराजगंज में सम्पूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की सुनी समस्याएं

● निशुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जागरूकता शिविर सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर की अध्यक्षता में तहसील महराजगंज में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया जिलाधिकारी ने कहा कि जन सामान्य की शिकायतों का स्थानीय स्तर पर समाधान किया जाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है,जिसके क्रम में तहसील व थानों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया जाता है। इसमें स्थानीय नागरिक उपस्थित होकर अपनी समस्याओं का समाधान करा सकते है। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारी जनता की इन शिकायतों का निस्तारण त्वरित एवं समयबद्ध तरीके से एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में यदि कोई समस्या है तो उसका कारण स्पष्ट करते हुए अवगत कराना सुनिश्चित किया जाये तो वही शिवगढ़ विकासखंड के कमलापुर आंवाडीह गांव निवासिनी पीड़िता किशुन दुलारी पत्नी स्वर्गीय जग प्रसाद ने शिकायती पत्र देते हुए कहा कि 03 वर्ष पूर्व वृद्धावस्था पेंशन की जांच करने पहुंचे सुमित कुमार वर्मा ग्राम विकास अधिकारी ने मुझको मृत घोषित कर दिया जबकि मैं जीवित हूं साहब। मामले को गंभीरता से लेते हुए जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने खंड विकास अधिकारी वर्षा सिंह को सुमित कुमार वर्मा को तत्काल निलंबित करने के निर्देश दिए तो वही रघुनाथपुर मजरे भटसरा निवासी सियाराम पुत्र गुरुदीन ने हल्का लेखपाल शिव प्रकाश मौर्य पर दर्ज घरौनी की जमीन पर जबरन पैसा लेकर दूसरे पक्ष को कब्जा करवाने की शिकायत की है।

जिस पर जिलाधिकारी ने जांच कराकर कड़ी कार्रवाई करने की बात कही वहीं टूक गांव के श्रीमती गुट्टा पत्नी स्वर्गीय राम हर्ष शिकायती पत्र देते हुए कहा है कि दबंग प्रतिपक्षी गण महिला सुख राजा पत्नी बाबूलाल ने प्रथिनी की सहन की भूमि कब्जा कर रखा है तथा आए दिन गाली गलौज अमादा फौजदारी पर हो जातें है जिसको निस्तारित करने की मांग पीड़िता ने जिलाधिकारी से की है जिलाधिकारी ने बताया कि तहसील महराजगंज में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में राजस्व विभाग 15, पुलिस 22, विकास 05 एवं अन्य 13 कुल 55 प्रकरण प्राप्त हुए, जिसमें से 06 प्रकरणों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया।

शेष प्रकरणों के निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को निर्देश के साथ उपलब्ध करा दिये गये कि उनका निस्तारण एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित कराए पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह ने भी पुलिस से संबंधित मामलों को सुना और संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए इस अवसर उप जिलाधिकारी गौतम सिंह, एवं क्षेत्राधिकारी प्रदीप कुमार, जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी नवीन चंद्रा, डीपीआरओ सौम्यशील सिंह, खंड विकास अधिकारी वर्षा सिंह, खंड विकास अधिकारी बछरावां शिव बहादुर सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी उबैदुल रहमान, ए आर ओ डॉक्टर राकेश, पूर्ति निरीक्षक मुकेश पांडे, तहसीलदार मंजुला मिश्रा, नायब तहसीलदार उमेश चंद्र त्रिपाठी एवं सत्याराज, कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव, शिवगढ़ थाना अध्यक्ष बिंध्य विनय, थाना अध्यक्ष बछरावां राजीव सिंह, थाना अध्यक्ष चंदापुर अरविंद सिंह, अधीक्षक डॉक्टर गणनायक पांडे, अधिशासी अभियंता विद्युत संदीप सिंह, वरिष्ठ लिपिक रामचंद्र त्यागी, जमुना प्रसाद समेत जिला एवं तहसील स्तरीय सभी विभागों के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

सामाजिक सद्भाव की बैठक में लोगों ने ली समरसता की शपथ

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के चिनहट क्षेत्र अंतर्गत अनौरा कला ग्राम सभा में एक निजी प्रतिष्ठान अंतर्गत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने पर वृहद गृह संपर्क अभियान सामाजिक समरसता और सद्भाव के निमित्त एक बैठक ग्राम प्रधान अनौरा कला अमित राज यादव के नेतृत्व में आयोजित की गई कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जात-पात का भेड़ भूल कर एक दूसरे के हित में कार्य करना और एक दूसरे को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य करना रहा। कार्यक्रम में वक्ता जिला प्रचारक लखनऊ ग्रामीण कोमल ने अपना वक्तव्य दिया इस मौके पर नगर संघचालक शिवसेवक खंड कार्यवाह ज्ञानेंद्र बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान की कर्ताधर्ता मनु सिंह मनीषा बीडीसी राकेश राका आर एन त्रिपाठी सुनील सिंह सूरज अशोक यादव सेम समेत सैकड़ो की संख्या में गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

योगी सरकार ने यूपी पुलिस को दी दंगा नियंत्रक वज्र वाहनों की सौगात

● खरीद को मिली मंजूरी

दंगा नियंत्रण क्षमता बढ़ाने पर जोर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने राज्य की पुलिस को एक बड़ी सौगात देते हुए दंगा नियंत्रण के लिए वज्र वाहनों की खरीद को मंजूरी दे दी है। इस खरीद पर 9.70 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। यह फैसला राज्य में कानून व्यवस्था को और सुदृढ़ करने तथा आपात स्थितियों में पुलिस की प्रतिक्रिया क्षमता को प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संवेदनशील शहरों में बढ़ेगी वज्र की तैनाती

सरकारी प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि मंत्रिमंडल ने गृह विभाग के इस प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी है। इस योजना के तहत, राज्य के संवेदनशील शहरों में इन विशेष दंगा नियंत्रक वज्र वाहनों की संख्या बढ़ाई जाएगी। इसका मुख्य उद्देश्य किसी भी आपात स्थिति, खासकर दंगे या बड़े विरोध-प्रदर्शनों के दौरान, पुलिस को त्वरित और प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने में सक्षम बनाना है।

स्वीकृत राशि:9.70 करोड़

उद्देश्यः दंगा और उपद्रव जैसी स्थितियों से निपटने के लिए त्वरित कार्रवाई और प्रभावी नियंत्रण।

फोकसः संवेदनशील और उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में तैनाती बढ़ाना।

यह कदम उत्तर प्रदेश पुलिस बल के आधुनिकीकरण और उनकी परिचालन दक्षता को बढ़ाने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है।

'वज्र' वाहन क्या हैं? वज्र वाहन विशेष रूप से भीड़ और दंगा नियंत्रण के लिए डिज़ाइन किए गए सुरक्षा वाहन होते हैं। ये वाहन आमतौर पर उच्च दबाव वाले पानी के तोप, आंसू गैस के गोले दागने वाले उपकरण और भीड़ को तितर-बितर करने के लिए अन्य प्रणालियों से सुसज्जित होते हैं। ये पुलिसकर्मियों को सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ भीड़-भाड़ वाली अप्रिय स्थितियों को नियंत्रित करने में सहायता करते हैं।

कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने पर सरकार का ध्यान

हाल के वर्षों में, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य सरकार ने कानून व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। नए वज्र वाहनों की खरीद पुलिस की बढ़ती चुनौतियों से निपटने की तैयारियों को दर्शाती है। इससे पहले भी, सरकार ने पुलिस बेड़े के आधुनिकीकरण के लिए यूपी-112 परियोजना के तहत नई पीआरवी (पुलिस प्रतिक्रिया वाहन) और अन्य वाहनों की खरीद को भी मंजूरी दी थी, जिसमें कुल 22.64 करोड़ स्वीकृत किए गए थे।

बिहार चुनाव में जीत पर मलिहाबाद में जश्न भाजपा कार्यकर्ताओं ने बांटी मिठाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मलिहाबाद। बिहार विधानसभा चुनाव में मिली शानदार जीत के उपलक्ष्य में शनिवार को मलिहाबाद के डाक बंगला परिसर में भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ताओं ने जमकर जश्न मनाया। इस अवसर पर, मंडल के साथियों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दी और खुशी का इजहार किया। यह आयोजन मलिहाबाद मंडल द्वारा किया गया जहाँ कार्यकर्ताओं का उत्साह देखते ही बन रहा था। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष आशीष द्विवेदी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने बिहार में मिली जीत को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व पर जनता के विश्वास की मुहर बताया।द्विवेदी ने कहा बिहार की जनता ने एक बार फिर विकास और सुशासन को चुना है। यह जीत न केवल बिहार बल्कि पूरे देश के भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए ऊर्जा का संचार करेगी। हमें इस उत्साह को संगठन के कार्यों में लगाकर आने वाले चुनावों के लिए तैयार रहना है।कार्यक्रम में मंडल के कई प्रमुख पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे, जिन्होंने एक स्वर में पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को इस ऐतिहासिक जीत के लिए धन्यवाद दिया।इस अवसर पर रूपेश मिश्र, सैयद खलील अहमद,प्रवीण उर्फ अन्ना, शशिधर गुप्ता (भोलानाथ), प्रमोद पाठक, विनय प्रताप सिंह, राजेश लोधी, इमरान अंसारी सहित सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा में एसबीआई शाखा स्थापना की अनुमति पत्र पर खबर सुनते ही उत्सव का माहौल

श्रीभूमि: श्रीभूमि जिले के रामकृष्णनगर विधानसभा के दुल्लभछड़ा -निविया-चेरागी क्षेत्र में एकमात्र यूबीआई शाखा (वर्तमान पीएनबी) थी, जिसमें कुछ सैकड़ों ग्राहक थे। उनकी समस्याओं के

समाधान के लिए स्थानीय शुभचिंतकों ने 2016 में दुल्लभछड़ा में एसबीआई शाखा स्थापना के लिए लोगों द्वारा हस्ताक्षरित ज्ञापन पत्र के आधार पर विभाग की ओर से क्षेत्र का निरीक्षण करने के बाद इसे सुरक्षित रखा। फिर भी, दुल्लभछड़ा स्टेशन रोड के निवासी एवं सेवानिवृत्त एडीसी नीलेमनी दास ने 2015 में सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद शाखा के ग्राहकों की समस्याओं को हल करने के लिए सुरक्षित रखे गए लोगों के आवेदन को लेकर रामकृष्णनगर-शिलचर-गुवाहाटी और यहां तक कि मुंबई के एसबीआई अधिकारियों के साथ लोगों का प्रतिनिधित्व करते हुए दौड़-धूप की, साथ ही विभागीय अधिकारियों के साथ तीन बार दुल्लभछड़ा के भौगोलिक क्षेत्रों का निरीक्षण कराया।यहां तक कि कोविड के बाद दुल्लभछड़ा-शिलचर पैसेंजर और दुल्लभछड़ा-गुवाहाटी एक्सप्रेस ट्रेन के अलावा फाकुआ क्षेत्र में खराब ट्रांसफॉर्मर परिवर्तन में भी उनकी भूमिका अद्वितीय रही। अपने जन्मस्थान के विकास के लिए उनका निरंतर प्रयासों से दुल्लभछड़ा में एसबीआई शाखा स्थापित करने के लिए स्वीकृति पत्र प्राप्त करने पर स्थानीय जनता की ओर से उनका आभार व्यक्त करने के साथ ही लंबी उम्र की कामना करते हैं। साथ ही विभागीय अधिकारियों की सराहना करते हैं। स्वीकृति पत्र की खुशी में तीनसुकिया एसबीआई शाखा के अधिकारियों को सेवानिवृत्त एडीसी निलमणि दास ने खुशी-खुशी मिठाई खिलाई।

वंदे मातरम गीत के 150 वर्ष पूरे होने पर हुआ भव्य कार्यक्रम

राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम आम जनमानस के कंठ में हो- राज्यसभा सांसद

हमीरपुर- पुलिस लाइन स्टेडियम में वंदे मातरम गीत के 150 वर्ष पूरे होने पर वर्षगांठ के उपलक्ष में भव्य कार्यक्रम किया गया,

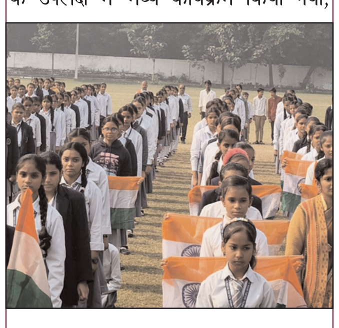

जिसके मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद बाबूराम निषाद रहे। कार्यक्रम में विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, स्कूलों के शिक्षकों व आम जनमानस तथा जनपद स्तरीय अधिकारियों तथा पदाधिकारियों एवं भाजपा के

कार्यकर्ताओं द्वारा बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य विकास अधिकारी अरुण कुमार सिंह, एडीएम वित्त एवं राजस्व विजय शंकर तिवारी, राज्यसभा सांसद प्रतिनिधि अशोक तिवारी, भाजपा जिला अध्यक्ष सुनील पाठक, नगर पालिका अध्यक्ष कुलदीप निषाद एवं पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता गणों द्वारा वंदे मातरम गीत का सामूहिक गायन किया गया।

अपर कलेक्टर के आदेश को पूर्व उपसरपंच ने दिखाया ठेंगा, अवैध जमीन पर धड़ल्ले से चल रहा पेट्रोल पंप बनाने का काम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शहडोल/जयसिंहनगर: ग्राम पंचायत अमझोर में सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा का मामला सामने आया है। पटवारी से सांठगांठ कर अमझोर ग्राम पंचायत के पूर्व उपसरपंच ने बड़ा घोटाला किया है। सबसे पहले तो सरकारी जमीन पर कब्जा किया और अब उस पर पेट्रोल पंप बनाने की तैयारी चल रही है। अपर कलेक्टर ने निर्माणाधीन जमीन पर रोक भी लगा दी है, लेकिन पूर्व उपसरपंच डंके की चोट पर प्रशासन के आदेश को ठेंगा दिखा रहा है।

क्या है पूरा मामला- ग्राम पंचायत के पूर्व उपसरपंच चंद्रमा तिवारी ने अमझोर के पूर्व पटवारी श्रुति तिवारी के साथ मिलीभगत से फर्जी दस्तावेज तैयार करवाया। फिर चरकानाला (अमझोर) पर स्थित शासन की भूमि खसरा क्रमांक 179 रकबा 5.64 एकड़ के अंश रकबा 179/3/1 पर कब्जा कर लिया और कागजों में उस जमीन पर अपना मालिकाना हक बताया और फिर उस पर जोरशोर से पेट्रोल पंप का काम शुरू हो गया।

अवैध कब्जा में किसने दिया साथ

चंद्रमा तिवारी ने पेट्रोल पंप बनवाने के लिए इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड में आवेदन दिया। ग्राम पंचायत के पदाधिकारियों से फर्जी अनापत्ति प्रमाण पत्र तैयार करके आवेदन के साथ जमा किया और उस पर पेट्रोल पंप काम शुरू हो गया।

कैसे भ्रष्टाचार का हुआ पर्दाफाश

जयसिंहनगर के मशहूर वकील रूद्र प्रताप सिंह ने इस मामले को लेकर अपर कलेक्टर शहडोल के कोर्ट में निगरानी आवेदन साल 2023-24 में किया, जिसमें खुलासा हुआ कि चंद्रमा तिवारी अपने 2 भाइयों (बालगोविंद तिवारी और राघवेंद्र तिवारी) के साथ मिलकर जिस जमीन पर पेट्रोल पंप बनवा रहा है, वो असल में सरकारी जमीन है।

चंद्रमा तिवारी ने अप कलेक्टर के आदेश को दिखाया ठेंगा

अपर कलेक्टर ने इस मामले को गंभीरता से लिया और खुद माना कि जिस जमीन पर पेट्रोल पंप बन रहा है वो शासन की जमीन है। इसके बाद अपर कलेक्टर ने तत्काल प्रभाव से जमीन पर चल रहे अवैध निर्माणाधीन पेट्रोल पंप का काम रोकते हुए स्थगन आदेश दिनांक 27-10-2025 को निगरानी प्रकरण क्रमांक 0069/निगरानी/23-24 पर यथास्थिति कायम करने का आदेश जारी किया है। लेकिन अपर कलेक्टर के आदेश के बाद उस जमीन पर जोरशोर से काम चल रहा है।

साल 1993 से चल रहा है अवैध कब्जा का खेल

चंद्रमा तिवारी के पिता जमुना प्रसाद

तिवारी ने साल 1993-94 में शासन की जमीन पर अवैध कब्जा किया. एक जमीन (खसरा क्रमांक 179/3) पर खुद कब्जा करके मालिकाना हक का फर्जी दस्तावेज बनवाया और सांठगांठ करके दूसरी जमीन (खसरा क्रमांक 179/2) का पट्टा अपनी बहन सुशीला के नाम पर करवा दिया।

जमीन बेचने के नाम पर कई लोगों से की ठगी

चंद्रमा तिवारी ने जमीन बेचने के नाम पर कई लोगों से ठगी की है. उसने अपनी बुआ की जमीन को रोड के सामने की भूमि बताकर 13 से 14 लोगों को बेच दी और लाखों रुपये ऐंठ लिए. बाद में खुलासा हुआ कि बेची गई भूमि रोड किनारे ना होकर दूसरी जगह पर है। अब तक उन मासूमों को अपने खून-पसीने की कमाई के पैसों के बदले में जमीन नहीं मिली है और वे दर-दर ठोकरें खा रहे हैं।

गन्ने के खेत में काम कर रहे किसान पर नीलगाय ने किया हमला

अस्पताल ले जाते समय रास्ते में हुई मौत

हमीरपुर- राठ तहसील के मझगवां थाना क्षेत्र के धगवां गांव में स्थित गन्ने के खेत में काम कर रहे 51 वर्षीय एक किसान पर नीलगाय ने अचानक हमला कर दिया। जिसके बाद परिजनों के द्वारा घायल हुए किसान को आनन फानन में इलाज हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ले जाया गया। जहां चिकित्सक ने किसान को मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी लगते ही मृतक किसान के परिवार में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस के द्वारा शनिवार को मृतक किसान के शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराया गया। जानकारी के अनुसार राठ तहसील के मझगवां थाना क्षेत्र के धगवां गांव का निवासी 51 वर्षीय किसान राजवीर सिंह जो कि आज शनिवार को अपने गन्ने के खेत में गुड़ बनाने सम्बन्धी कार्य कर रहा था। तभी अचानक उसी दौरान नीलगाय ने किसान राजवीर पर हमला कर दिया। जिसके बाद नीलगाय के हमले से घायल हुए किसान राजवीर को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ले जाया गया जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक के परिजनों ने बताया कि मृतक किसान खेती किसानी कर अपने परिवार का भरण पोषण करता था। जो कि अपने पीछे पत्नी रेखा देवी, मां गौरी देवी व पुत्र सुमित और शोभित के अलावा भाई प्रदीप और प्रीतम सिंह सहित अन्य सभी परिजनों को रोता बिल खाता हुआ छोड़ गया है। मामले में मझगवां थाना के प्रभारी इंस्पेक्टर ने बताया कि मृतक किसान के शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराया गया है तथा आवश्यक करवाई कराई जाएगी।

विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली प्रांत द्वारा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में जागरूकता अभियान चलाया जाएगा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली: विश्व हिंदू परिषद दिल्ली प्रांत की एक महत्वपूर्ण बैठक बीते 13 नवंबर 2025 को संपन्न हुई, जिसमें राजधानी की सुरक्षा के संबंध में समाज को मजहबी कट्टरपंथी प्रभावों से बचाने के विषय पर व्यापक चर्चा की गई। बैठक में यह तथ्य सामने आया कि आतंकवादी एवं कट्टरवादी तत्व समाज के विभिन्न मंचों । सामाजिक, सांस्कृतिक,व डिजिटल, संस्थागत और सूचना माध्यमों–का दुरुपयोग कर अपनी गतिविधियों को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। बैठक में इस संवेदनशील विषय पर गहन विचार-विमर्श के पश्चात सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया है कि पूरे दिल्ली के समाज को जागरूक करना अनिवार्य है।सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र–युवा, शिक्षण संस्थान, सांस्कृतिक संगठनों, बाजार संघों, आरडब्ल्यूए, धार्मिक संस्थानों, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सामाजिक मंचों तक विस्तृत जागरूकता अभियान पहुँचाया जाएगा। कट्टरवादी दुरुपयोग योग्य मंचों, संस्थानों और भूमिकाओं की सूची को समाज तक पहुँचाया जाएगा।

ताकि नागरिक स्वयं सतर्क रह सकें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना प्रशासन को दे सकें।

दिल्ली के जनप्रतिनिधियों और प्रशासन दोनों को ज्ञापन सौंपे जाएंगे। इन ज्ञापनों में अनुरोध किया जाएगा कि ज़संवेदनशील क्षेत्रों पर विशेष निगरानी तंत्र स्थापित किया जाए संदिग्ध फंडिंग, नेटवर्किंग और डिजिटल प्रचार पर कड़ी निगरानी हो युवाओं को कट्टरपंथ से बचाने हेतु एंटी-रेडिकलाइजेशन कार्यक्रम प्रारंभ किए जाएँ। और समाज में सकारात्मक संवाद स्थापित किया जाएगा। विश्व हिन्दू परिषद यह स्पष्ट करती है कि इस विषय का किसी समुदाय का संबन्ध केवल मजहबी विस्तार या धर्मांतरण तक सीमित न होकर सम्पूर्ण राष्ट्र की सुरक्षा और हिन्दू समाज की सुरक्षा के साथ जुड़ता है , यह उन संरचनाओं और मंचों के दुरुपयोग से संबंधित है जिनका उपयोग राष्ट्र-विरोधी तत्व अपने एजेंडे के लिए कर रहे हैं। प्रांत मंत्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता ने कहा दिल्ली देश की राजधानी है यहां समाज की सजगता ही सुरक्षा की पहली दीवार है।कट्टरवादी तत्व किसी भी मंच का दुरुपयोग कर सकते हैं, इसलिए पूरे समाज को जागरूक, संगठित और आत्मविश्वासी बनाना आवश्यक है। विश्व हिन्दू परिषद जनता, प्रशासन और जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर यह अभियान चलाएगी।अंत में, परिषद ने यह संकल्प दोहराया सुरक्षित दिल्ली सजग समाज सशक्त राष्ट्र इसी मूल विचार को आगे बढ़ाते हुए विश्व हिन्दू परिषद आने वाले दिनों में व्यापक जनसंपर्क, परिचर्चा और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करेगी। यह कार्यक्रम संपूर्ण दिल्ली के 173 प्रखंड और 30 जिलों में आयोजित किए जाएंगे और सभी प्रकार की संस्थाएं जैसे धार्मिक राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक खेल आवासीय आदि। से भी सहयोग करने के लिए निवेदन किया जाएगा।

एसएस मेमोरियल इंग्लिश मीडियम स्कूल में रंगारंग कार्यक्रमों के साथ बाल दिवस का भव्य आयोजन किया गया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा स्थित एसएस मेमोरियल इंग्लिश मीडियम स्कूल में बाल दिवस बड़े ही हर्षोल्लास और सांस्कृतिक माहौल के बीच मनाया गया। संवर्धना नृत्य-गीत सहित बच्चों की विविध प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को आकर्षक बना दिया। 1990 में स्थापित इस विद्यालय में हर वर्ष की तरह इस बार भी बाल दिवस को त्योहार जैसा रूप दिया गया। कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल संस्थापक प्रदीप सिन्हा, प्रसिद्ध गायक जुबिन गार्ग, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू तथा संस्थापक के पिता और समाजसेवी सुधन्य सिन्हा की प्रतिमाओं पर दीप प्रज्ज्वलन और पुष्पांजलि अर्पित कर की गई। विद्यालय के प्रधानाचार्य सुरेश कुमार थप्पा ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों, अभिभावकों व नगरवासियों का अभिनंदन किया। इस दौरान छात्र-छात्राओं ने नई वेशभूषाओं में विभिन्न समुदायों के सांस्कृतिक नृत्य एवं गीत प्रस्तुत किए, जिन्हें दर्शकों ने खूब सराहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे- दुल्लभछड़ा जिला परिषद सदस्य प्रणव मुखर्जी, दुल्लभछड़ा सहकारी समिति के सचिव एवं समाजसेवी दीपन सिन्हा, दरगारबंद जीपी के उपाध्यक्ष श्याम कुमार सिन्हा, लालछड़ा जीपी के अध्यक्ष संजय गोस्वामी, स्कूल के पूर्व अध्यक्ष रामकुमार गोस्वामी, पूरे कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्रबंध निदेशक बिमल कुमार सिन्हा ने किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों में उत्साह का माहौल देखते ही बन रहा था।

मांगें पूरी न होने पर लेखपाल संघ ने तहसील परिसर में धरना प्रदर्शन कर की नारेबाजी

हमीरपुरः- राठ तहसील परिसर में आज शनिवार को आठ सूत्रीय मांगों का समाधान न होने पर उप्र लेखपाल संघ द्वारा धरना प्रदर्शन किया गया। इस मौके पर लेखपालों ने जमकर नारेबाजी भी की। तथा तहसीलदार को ज्ञापन भी सौंपा। राठ तहसील में लेखपाल संघ के तहसील अध्यक्ष कमलेश कुमार चतुर्वेदी ने बताया कि वेतन उच्चीकरण, भत्तों में बढ़ोत्तरी, यात्रा भत्ता, स्टेशनरी भत्ता, एसपी विसंगति, पदोन्नति में वृद्धि, पदनाम परिवर्तन, अंर्तमंडलीय स्थानान्तरण व राजस्व पुलिस चौकी की स्थापना सहित आठ सूत्रीय मांगों का समाधान न होने पर उन सभी लेखपालों के द्वारा धरना प्रदर्शन कर कार्य बहिष्कार कर किया गया है। तथा उन्होंने तहसीलदार राठ को ज्ञापन भी सौंपा है। धरना प्रदर्शन के दौरान बृजेश योगी, अरिमर्दन सिंह, लोकेंद्र सिंह, जितेंद्र बहादुर, पुनीत विश्वकर्मा, सावित्री पाल, आरती सहित दर्जनों लेखपाल गण मौजूद रहे।

नगराम में घायल मिला राजकीय पक्षी सारस, इलाज के दौरान तोड़ा दम

● .....वन विभाग ने सम्मानपूर्वक किया अंतिम संस्कार; कटीले तार में उलझकर घायल होने की आशंका, वन्यजीव प्रेमियों में निराशा।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नगराम। लखनऊ। राजधानी लखनऊ के नगराम थाना क्षेत्र के हरदोइया-गनेशनगर से चोरहापुर मार्ग पर स्थित नहर किनारे शनिवार दोपहर एक राजकीय पक्षी सारस गंभीर रूप से घायल अवस्था में पाया गया। उत्तर प्रदेश का राजकीय पक्षी होने के कारण घटना की सूचना मिलते ही क्षेत्र में हलचल बढ़ गई। खेतों की ओर काम करने गए ग्रामीणों ने जब सारस को जमीन पर तड़पता देखा, तो तुरंत पुलिस को सूचना दी। सूचना पर उपनिरीक्षक सैयद हासिम अली तथा हरदोइया चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक प्रदीप कुमार पाल टीम के साथ मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायज़ा लेने के बाद वन विभाग को मामले की जानकारी दी।

सूचना प्राप्त होते ही वन दरोगा नलनीश मिश्रा और सहायक कर्मचारी रामनाथ अपनी टीम के साथ पहुंचे और घायल सारस को रेस्क्यू कर नगराम पशु चिकित्सालय भेजा। डॉक्टरों ने उपचार शुरू किया, लेकिन सारस के शरीर पर कई जगह गहरे घाव और चोटें थीं। प्राथमिक जांच में पशु चिकित्सकों ने अनुमान लगाया कि सारस संभवतः किसी कटीले तार में उलझकर बुरी तरह घायल हो गया था। हालत बेहद गंभीर होने के कारण उपचार के दौरान ही सारस की मौत हो गई, जिससे वन विभाग और ग्रामीणों में निराशा फैल गई।

वन विभाग ने किया सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार

राजकीय पक्षी होने के नाते वन विभाग ने मृत सारस का सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार किया और उसे सुरक्षित स्थान पर दफना दिया। वन डिप्टी रेंजर अभिषेक चौधरी ने बताया कि ग्रामीणों की सूचना पर टीम मौके पर पहुंची थी। जांच में यह स्पष्ट हुआ कि सारस खेतों में घायल पड़ा था और उसके शरीर पर कई जगह गंभीर घाव थे। उन्होंने कहा कि प्राथमिक तौर पर ऐसा प्रतीत

होता है कि वह कटीले तार में फंसकर घायल हुआ होगा। इलाज के लिए पूरी कोशिश की गई, लेकिन उसकी जान नहीं बच पाई।

ग्रामीणों ने कटीले तारों की जांच की मांग उठाई

घटना ने वन्यजीव प्रेमियों और स्थानीय ग्रामीणों को चिंतित कर दिया है। ग्रामीणों ने शासन-प्रशासन से मांग की है कि खेतों, नहर किनारों और ग्रामीण मार्गों के आसपास लगाए जा रहे कटीले तारों की उचित जांच की जाए, ताकि भविष्य में वन्य जीवों को ऐसी दुर्घटनाओं से बचाया जा सके। उनका कहना है कि यदि समय रहते निगरानी की जाए, तो इस प्रकार की दर्दनाक घटनाओं को रोका जा सकता है।

आजाद समाज पार्टी/भीम आर्मी की अध्यक्षता में पूरे शहडोल जिले में मनाया गया बिरसा मुंडा जयंती

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दिनेश चौधरी की रिपोर्ट शहडोल

शहडोल- भगवान बिरसा मुंडा की जयंती हर साल 15 नवंबर को मनाई जाती है, जिसे अब केंद्र सरकार द्वारा जनजातीय गौरव दिवस के रूप में भी घोषित किया गया है। आज़ाद समाज पार्टी सहित कई राजनीतिक दल जैसे ओबीसी महासभा, भारत आदिवासी पार्टी, ओबीसी महासभाऔर विभिन्न सामाजिक संगठन के द्वारा, इस दिवस को मनाया गया। आजाद समाज पार्टी/भीम आर्मी संपूर्ण जिला शहडोल में भी हर साल अलग- अलग जगहों पर बिरसा मुंडा की जयंती मनाया गया ! बड़े स्तर पर इसे 'जनजातीय गौरव वर्ष' के रूप में मनाती है, और अन्य क्षेत्रीय और जनजातीय संगठन भी इस महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक को श्रद्धांजलि देते हैं। जिसमे जनजाति संस्कृति शैला नृत्य का भी आयोजन किया गया था कार्यक्रम में सभी वरिष्ठ समाजिक कार्यकर्ताओ का स्वागत किया गया। साथ ही उनके द्वारा सामज को नई दिशा देने की

कोशिश की गई।

शहडोल जिले के अंतिम छोर में भी बिरसा मुंडा जयंती के अवसर पर ब्योहारी विधानसभा मे भी आजाद समाज पार्टी के शहडोल जिला अध्यक्ष कैलाश कुमार अहिरवार, फूलमती साहू सिंगरौली , संतोष कुमारी साकेत, कृष्णा साकेत, मीनाक्षी साकेत, संध्या रावत, प्रभा पनिका, पूजा साहू, लक्ष्मी साकेत, प्रभा कोल, रेखा सिह, पूजा साकेत, माया कुशवाहा, मीना साकेत, शालू बंसल, ममता साकेत, कुआँ सविता, साकेत शांति, पटेल खड्डा, सावित्री पटेल (ब्योहारी)आरती पटेल, बराछ दिव्या सिंह, रावत मीरा बाई कोल (पोंडी), की उपस्थिति में रैली व मंचीय कार्यक्रम की गई है ! कार्यक्रम में मुख्य रूप से आतिथि,

अधिवक्ता हरि माझी, परशुराम साकेत, लाल बहादुर सिंह नेटी, अनिल अहिरवार, अजय भारती, अंकित सिंह परस्ते, पुरुषोत्तम सिंह मरावी, रामकुमार अहिरवार, अमृत लाल मरावी, विकेश प्रजापति, भीमजाने साहू, जॉर्डन डिसूजा, भैयालाल चर्मकार, सविता , दिनेश साकेत, रामप्रताप कुशवाहा, हंसिका साकेत, प्रभा रावत, किशन साकेत भीम मिशन आरकेस्ट्रा कलाकार, राजेन्द्र साकेत , प्रदीप कोल, सम्राट सुरेंद्र, विक्रम रावत, दीपांशु नेटी, अमित बाल्मीक, दीपक बाल्मीकि, भंडारी जैसवाल, फूलमती साहू सिंगरौली। आयोजन समिति में प्रमुख रूप से। बृजकिशोर पटेल, सम्राट सनित, चंद्रशेखर साकेत, का प्रमुख योगदान रहा है..!

सफदरजंग अस्पताल के पीएमआर विभाग में इस बाल दिवस पर क्षमता, समावेश और आनंद का उत्सव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली: सफदरजंग अस्पताल के भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास विभाग (पीएमआर) ने बाल दिवस उत्साह खुशी के साथ मनाया दिव्यांग बच्चों के चेहरों पर मुस्कान ला दी। व्यावसायिक चिकित्सा इकाई ने चिकित्सा और समाज कल्याण इकाई के साथ मिलकर कई आकर्षक सामूहिक गतिविधियों का आयोजन किया, जिनमें रंग भरने के सत्र, मनोरंजक खेल और रचनात्मकता, सामाजिक संपर्क और मोटर कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए और चिकित्सीय अभ्यास शामिल थे।

इस कार्यक्रम में लगभग 35 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों ने भाग लिया, और प्रत्येक ने उत्साह और ऊर्जा के साथ भाग लिया। इस समारोह का उद्देश्य न केवल बच्चों का मनोरंजन करना था, बल्कि समावेशिता को प्रोत्साहित करना और उनके समग्र विकास और स्वतंत्रता में चिकित्सा की भूमिका को उजागर करना भी था। इस अवसर पर, सफदरजंग अस्पताल के निदेशक डॉ. संदीप बंसल ने कहा हर बच्चा बचपन के आनंद का अनुभव करने का हकदार है, चाहे उसकी शारीरिक या विकासात्मक चुनौतियाँ कुछ भी हों। आज का यह उत्सव हमें याद दिलाता है कि देखभाल, करुणा और चिकित्सीय सहायता से, विकलांग बच्चे उल्लेखनीय प्रगति कर सकते हैं और एक संपूर्ण जीवन जी सकते हैं। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. चारु बाम्बा ने पीएमआर टीम के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा इस तरह की पहल समावेशी देखभाल के प्रति अस्पताल की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस तरह के समारोह बच्चों और उनके परिवारों का उत्साह बढ़ाते हैं, साथ ही आत्मविश्वास से भरे और सक्षम युवा जीवन को आकार देने में पुनर्वास सेवाओं के महत्व को भी पुष्ट करते हैं। पीएमआर के विभागाध्यक्ष एचओडी डॉ. अजय गुप्ता ने भी अपने विचार साझा करते हुए कहा पीएमआर विभाग हमेशा से समग्र पुनर्वास के लिए प्रतिबद्ध रहा है। व्यावसायिक चिकित्सा बच्चों को उनकी क्षमताओं को निखारने और रोजमर्रा की जिंदगी में सक्रिय

रूप से भाग लेने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमें अपनी टीम के समर्पण और सभी बच्चों द्वारा दिखाई गई सकारात्मक भावना पर गर्व है।कार्यक्रम का समापन उपहारों और जलपान वितरण के साथ हुआ, जिसने बच्चों और कर्मचारियों, दोनों के लिए इस दिन को यादगार बना दिया। सुश्री नीलम वर्मा, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, और उनकी टीम ने समारोह के आयोजन में सहयोग के लिए अस्पताल प्रशासन का आभार व्यक्त किया और विकलांग बच्चों के सशक्तिकरण और समावेशन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

सीस दीआ पर सिररू न दीआ साइकिल यात्रा दिल्ली से हुई रवाना

● सिखों में धर्मांतरण, नशे और फैशन परस्ती ने अपनी जगह बनाईः जी.के.

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली (15 नवंबर, 2025) श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में 'सीस दीआ पर सिररू न दीआ' साइकिल यात्रा आज श्री अखंड पाठ साहिब के समापन के बाद दिल्ली के गुरुद्वारा सीसगंज साहिब से शुरू हुई। गुरुद्वारा सीसगंज साहिब में 1675 ई. में गुरू तेग बहादर साहिब जी और उनके प्रिय सिखों भाई मति दास जी, भाई सती दास जी और भाई दयाला जी को धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के अपराध में तत्कालीन मुगल शासक औरंगजेब के आदेश पर शहीद किया गया था। यह साइकिल यात्रा 20 नवंबर को गुरू तेग बहादर साहिब जी की जन्म स्थली अमृतसर के गुरुद्वारा गुरू के महल में समाप्त होगी। इस अनूठी और ऐतिहासिक साइकिल यात्रा का आयोजन साइक्लिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व अध्यक्ष मनजीत सिंह जी.के. ने किया है। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य गुरू तेग बहादर साहिब जी की शहादत, करुणा, निडरता और निडरता की विरासत का प्रचार-प्रसार करना है। साथ ही, वर्तमान समय में सिखों के सामने धार्मिक पहचान, धर्मांतरण, धार्मिक वेशभूषा, नशे और जातीय सफाए जैसे खड़े खतरों के बारे में जागरूकता पैदा करना और समाज में शारीरिक व्यायाम, स्वास्थ्य देखभाल और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करना है। इस अवसर पर शिरोमणी अकाली दल, दिल्ली इकाई के अध्यक्ष परमजीत सिंह सरना, वरिष्ठ वकील हरविंदर सिंह फुल्का, वरिष्ठ अकाली नेता

कुलदीप सिंह भोगल, कश्मीरी पंडितों के संगठनों के प्रतिनिधियों सहित दिल्ली कमेटी के कई सदस्य और अन्य लोगों ने 500 किलोमीटर की इस यात्रा को चलें साइकिल चालकों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं।इस यात्रा के मुख्य उद्देश्य की जानकारी देते हुए मनजीत सिंह जी.के. ने कहा कि गुरू तेग बहादर साहिब जी ने दूसरों के धर्म की रक्षा की थी। लेकिन आज सिखों में धर्मांतरण, नशे और फैशन परस्ती ने अपनी जगह बना ली है। गुरू साहिबानों ने हमें शारीरिक तंदुरुस्ती के लिए नशों से दूर करके मल्ल अखाड़ों और गतका अखाड़े से जोड़ा था। गुरूओं ने हमें पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया था, लेकिन आज दिल्ली के मंत्री पंजाब के किसानों द्वारा जलाई जा रही पराली को दिल्ली के प्रदूषण का कारण बता रहे हैं। जबकि एक अध्ययन के अनुसार, दिल्ली के प्रदूषण में पराली के धुएं की हिस्सेदारी केवल 1.5 प्रतिशत है।

हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और पाकिस्तान के किसान भी पराली जला रहे हैं, लेकिन केवल पंजाब के किसानों को ही दोषी ठहराया जा रहा है। मनजीत सिंह जी.के. ने बैटरी चालित व्हीलचेयर के साथ इस यात्रा में एक विकलांग सिख युवक के द्वारा भागीदारी करने की सराहना की। मनजीत सिंह जी.के. ने कहा कि दिल्ली के प्रदूषण के मामले में भारत या पाकिस्तान के किसानों को खलनायक बनाने के बजाय, हमें उन्हें अन्नदाता के रूप में सम्मान देना चाहिए। अगर हिम्मत है, तो सरकार अंबानी-अडानी की प्रदूषण फैलाने वाली फैक्ट्रियों की ओर कदम बढ़ाए।

अकाली नेता परमजीत सिंह सरना ने जहां मनजीत सिंह जीके को इस साइकिल यात्रा के लिए बधाई दी वहीं उन्होंने यात्रा में पर्याप्त सहयोग न देने के लिए दिल्ली कमेटी के प्रबंधकों और मुख्य ग्रंथियों की भी खिंचाई की। परमजीत सिंह सरना ने कहा कि दिल्ली कमेटी के प्रबंधकों की बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है। क्योंकि प्रबंधकों ने यहां आकर साइकिल चालकों को एक फूलों का हार देने की हिम्मत भी नहीं दिखाई और न ही मुख्य ग्रंथियों ने यहां आकर अरदास करने की हिम्मत दिखाई है। जो ग्रंथी अध्यक्ष और महासचिव के आदेश के बिना अरदास करने नहीं आ सकते, क्या वो ग्रंथी कहलवाने के हकदार हैं? हरविंदर सिंह फुल्का ने 67 साल की उम्र में 500 किलोमीटर की साइकिल यात्रा का नेतृत्व करने के मनजीत सिंह जीके के दृढ़ संकल्प और साहस के लिए उन्हें बधाई दी। दिल्ली कमेटी सदस्य परमजीत सिंह राणा और सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. परमिंदर पाल सिंह ने इस अवसर पर मंच संचालन किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक पद्मश्री जतिंदर सिंह शंटी, वर्तमान दिल्ली कमेटी सदस्य करतार सिंह विक्की चावला, सतनाम सिंह खालसा, महिंदर सिंह, जतिंदर सिंह सोनू सहित अनेक पूर्व कमेटी सदस्य तथा मनजीत सिंह जी.के. के परिवार के सदस्य तथा सैकड़ों शुभचिंतक उपस्थित थे।